भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 23 | उदयपुर बुधवार 15 दिसंबर 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मेवाड़ में लोकगीतों की पहली ग्रामोफोन रिकॉर्ड

मेवाड़ में पहलीबार ग्रामोफोन रिकॉर्ड महाराणा भूपालसिंहजी द्वारा बनवाई गई। उन्होंने कई उत्कृष्ट कलाकार एवं कलावंत तैयार किए। इसके लिए नावघाट की गायिकाओं का चयन किया गया। लगभग एक माह तक कभी गुलाबबाग, कभी समोरबाग तो कभी सहेलियों की बाड़ी में रिहर्सल की गई। गाने वाली बाइयों में लच्छुबाई, कजोड़ीबाई, जसोदाबाई, देऊबाई, भूरीबाई, रतनप्रभा, मोड़ीबाई, गोपीबाई, फत्तीबाई सबकी परीक्षा ली गई।

उदयपुर में पहलीबार ग्रामोफोन रिकॉर्ड महाराणा भूपालसिंहजी द्वारा बनवाई गई। इसके लिए उन्होंने कई उत्कृष्ट कलाकार एवं कलावंत तैयार किए। उनकी पत्नी बड़थकुंवरी भी बड़ी सरल स्वभाव की धर्मनिष्ठ महिला थीं जिन्होंने पणिहारी, जला, घूमर, कांगसिया जैसे बहुप्रसिद्ध लोकगीतों की तर्जों पर कई भावनाओं की रचना की। इन्हीं भावनाओं का एक संग्रह 'श्री माताजी रा गीत व श्री हूजुर की भावना' नाम से प्रकाशित हुआ। इसमें उनकी लिखी 95 भावनाओं का संग्रह है। स्वर माधुर्य की दृष्टि से मेवाड़ के सभी ठिकानों में ये भावनाएं महिलाओं की कण्ठहार बनीं।

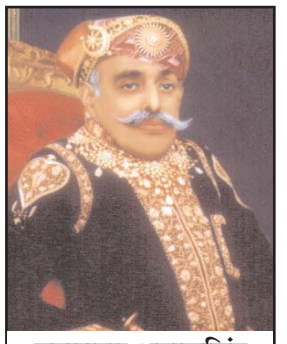

महाराणा भूपालसिंह

इन्हीं भावनाओं की लोकप्रियता से प्रभावित होकर महाराणा भूपालसिंहजी ने इनके ग्रामोफोन रिकार्ड तैयार करवाए। इसके लिए नावघाट की गायिकाओं का चयन किया गया। लगभग एक माह तक कभी गुलाबबाग, कभी समोरबाग तो कभी सहेलियों की बाड़ी में रिहर्सल की गई।

फत्तीबाई

इस कार्य के लिए दरबार की ओर से नंदलाल भंडारी, मेघराज धाबाई, ब्रजलाल जेठी तथा गमेरसिंह चौहान मुकर्रर किए गए। एक माथुर साहब थे जो लोक संगीत की गायकी के अच्छे जानकार थे। वे सब समझाते थे। गाने वाली बाइयों में लच्छुबाई, कजोड़ीबाई, जसोदाबाई, देऊबाई, भूरीबाई, रतनप्रभा, मोड़ीबाई, गोपीबाई, फत्तीबाई सबकी परीक्षा ली गई। माथुर साहब इन्हें लेकर मुम्बई गए। वहां आर्य निवास होटल में ठहरे। एक माह रूकना हुआ और आठ दिन रिर्हसल की। शेष दिन रिकॉर्डिंग चली और ग्रामोफोन रिकॉर्डें तैयार हुईं।

रतनप्रभा

फत्तीबाई (80) ने बताया कि ग्रामोफोन रिकॉर्ड की निर्माता नेशनल ग्रामोफोन रिकॉर्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड थी जबकि सेल प्रोप्राइटर उदयपुर के भटनागर ब्रदर्स थे। इस कम्पनी द्वारा 22 भावना की कुल 11 रिकॉर्डें भरी गईं। रिकॉर्ड पर कहीं उदयपुर पार्टी तो कहीं मिसेज फत्ती लिखा हुआ मिलता है।

फत्तीबाई उस दौर को याद करती है तो गौरवान्वित होती कहती हैं- 'राणीजीसा की लिखीं और उनकी प्रेरणा से ये रिकॉर्डें तैयार की गईं। वे मुझे रामप्यारीबाई कह कर बुलाती थीं। अकेली गाने वाली केवल मैं ही थी। समूह में भी प्रमुख स्वर मेरा रहता। जसोदा एवं देऊबाई सहायक स्वर के रूप में टेक को उठाती।

फत्तीबाई ने बताया कि पहली बार तीनों की साथ रिकॉर्डें भरते-भरते चूड़ी फट गई। इसकी सूचना दरबार को दी गई तो आदेश हुआ कि जिसकी आवाज अच्छी हो उसकी रिकॉर्ड भरी जाए। ऐसा ही हुआ। फत्तीबाई राजस्थानी माण्ड गाने की भी समर्थ गायिका रहीं। वह राजदरबार में ही नहीं, ठिकानों में भी सम्मान के साथ बुलाई जाती थी। उनकी दादी उम्मेदबाई ढोलक बजाती थी। पिता कजोड़जी हारमोनियम बजाते थे। पूर्व महाराणा फतहसिंहजी ने उनके लिए दिल्ली से हारमोनियम मंगवाया था जो पहला बाजा था।

फत्तीबाई द्वारा गाई गई भावनाओं में मुख्य भावना थी-(1) रघुवंश जहाँ में चमक रहा है (2) हिन्दवाणी सूरज घणा नोखीला हो (3) म्हाने म्हारा प्राणपति लागो प्यारा (4) पेच्याँ सोहे हो अन्दाता (5) जग के पालनहार (6) प्रजापाल पृथीपाल।

शकुंतलादेवी

उदयपुर-पार्टी के नाम से रिकॉर्ड की गई भावना में मुख्य थीं (1) घणा ने रूफाला हिन्दूपत राजा (2) मेवाड़ा अन्दाता मेरे प्राण के प्यारे (3) कईय न माँगू हो आवरीमाताजी (4) बना सा हस्ती तो कजली देश रो (5) आप अमर तपो हिन्दुआ सूरज (6) लगन लिखावत मोरे मेल पधारो (7) शम्भुजी म्हैं तो राज रा दरसन। ये भावनाएं संवत् 2001 में भरी गई।

इसके बाद एचएमवी द्वारा तवा रिकॉर्ड बने। उसमें उदयपुर की गायिका मोहिनी के कांगसिया, मोगरा गीत रिकॉर्ड किये गये। डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने बताया कि ये रिकॉर्डें मारवाड़ी कम्पनी दुर्गासिंह एण्ड संस जोधपुर द्वारा जारी की गइ। आगे जाकर उदयपुर के ही पन्नालाल 'पीयूष' ने एक रिकॉर्ड कम्पनी बना कर उन्होंने स्वयं अपने द्वारा गाये गीतों की रिकॉर्डें तैयार करवाईं। पणिहारी उनका सर्वाधिक लोकप्रिय लोकगीत था। पीयूषजी आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्त्ता थे। इनसे मैंने उनके अशोकनगर स्थिति निवास पर एकाधिक बार भेंट की।

फत्तीबाई ने बताया कि महाराणा फतहसिंहजी बड़े स्वाभिमानी थे। अंग्रेजों से सदा दूर रहते थे। दिल्ली में जब दरबार लगा तब उन्होंने लूण (नमक) पी लिया जिससे बनावटी दस्त के शिकार हो गए। फलस्वरूप वे दिल्ली नहीं गए और उनकी कुर्सी खाली रही। यही बात मुझे छींपों का आकोला निवासी योगीराज गोपीलालजी चौहान ने कही।

कजोड़जी इन महाराणा के खास मर्जीदान थे। कजोड़जी ही नहीं, इनके पूर्वजों ने भी महाराणा के साथ रहकर अपनी पूरी स्वामिभक्ति दिखाई। महाराणा अरसीसिंह के साथ सेवाजी ने रणबाज के रूप में युद्ध कर अमरगढ़ के पास सुई गांव में वीर गति प्राप्त की और जुझार कहलाए। इस पर महाराणा ने उनको जहाजपुर के पास छोटी भरणी गांव बख्शीश में दिया।

अरसीसिंह के बाद महाराणा भीमसिंह हुए जिन्होंने सेवाजी के वंशधर को सम्मानसूचक चांदी का गोटा बख्शा जिससे ये गोटेदार कहलाए। शीशम की लकड़ी का यह गोटा चांदी की जड़ाई से शोभित शेरमुखी था। इस सम्बन्ध में यह कैवत भी प्रचलित है- 'भीम अन्दाता गोटा बगस्यो।' यही नहीं, उन्हें दुवायता की पदवी भी मिली और गणगौर आदि विशिष्ट सवारियों तथा लवाजिमों में दोहे देने का सम्मानजनक हक मिला।

फत्तीबाई के पिता कजोड़जी रोड़ाजी के गोद गए। रोड़ाजी के पिता किशनजी और किशनजी के पिता भूराजी भी अच्छे गायक और वीर भावना से ओतप्रोत थे। फत्तीबाई को विविध तर्जों वाले अनेक लोकगीत कंठस्थ थे। जयपुर में प्रारम्भ हुए आकाशवाणी केन्द्र से इनके लोकगीतों का प्रसारण बड़ा प्रभावी रहा। धीरे-धीरे अन्य केन्द्रों से भी यह प्रसारण प्रारम्भ हुआ। दिल्ली में प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी एक जलसे में इनसे राजस्थानी लोकगीत सुने और सराहना की।

भगवान कछावा

महाराणा ने इन्हें महलों के पास ही पीछोला के किनारे की बस्ती नावघाट सुलभ कराई। इसी गायक घराने से नारायणीबाई, जानकीबाई की जब सन् 1952 में भारतीय लोककला मण्डल प्रारम्भ हुआ तो देवीलाल सामर ने मुख्य गायिकाओं के रूप में सेवाएं लीं।

पुरुषों में दीपलाल, नारायणलाल गंधर्व दोनों भाई थे जो सारंगी तथा तबला जलतरंग बजाने के उस्ताद थे। प्रदर्शन विभाग के माध्यम से इन्होंने सामरजी के साथ वर्षों तक पूरे देश तथा विदेशों में कार्यक्रम दिये। कलामण्डल में रहने के कारण मेरा इनसे काफी सम्पर्क रहा। इनके द्वारा गाये अनेक गीतों की रिकार्डिंग करने के साथ स्वरलपियां तैयार करवाई गईं। मेरे सम्पादन में 'राजस्थान स्वर लहरी' नाम से सर्वाधिक लोकप्रिय 32 पारम्परिक लोकगीतों का हिन्दी भावार्थ एवं लिपियों सहित प्रथम भाग प्रकाशित हुआ। ऐसे मैंने दो भाग और तैयार किये जो अप्रकाशित ही रहे।

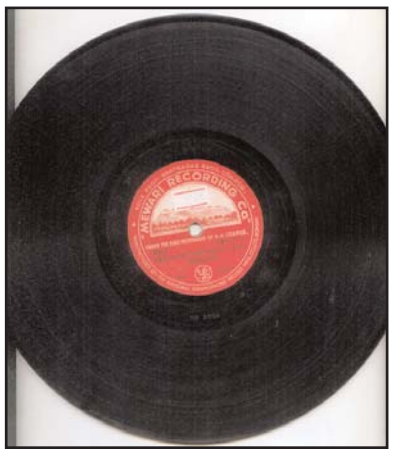

फत्तीबाई के सुपुत्र भगवान कछावा भी संजीदे लोकगायक के रूप में पहचान देते आकाशवाणी गायक बने। उनके पास उनकी मातुश्री की एक दर्जन रिकॉर्डें सुरक्षित हैं। इसी प्रकार रतनप्रभा की सुपुत्री शकुन्तलादेवी ने भारतीय लोककला मण्डल में रह प्रमुख नृत्यांगना के रूप में देश-विदेश में ख्याति अर्जित की तदनन्तर स्वतंत्र रूप से शाकुन्तलम संस्था की स्थापना कर अब तक देश के विभिन्न अंचलों में सवा लाख के करीब महिलाओं तथा बालिकाओं को राजस्थानी लोकनृत्यों में प्रशिक्षित कर चुकी हैं। यह कार्य अब भी यथावत है।

- म. भा.

पोथीखाना

क़मर मेवाड़ी के साहित्यिक अवदान पर संचयन का श्रेष्ठ नगीना

साहित्य जगत में जब कभी क़मर मेवाड़ी का नाम लिया जायगा तो उनके पीछे सम्बोधन पत्रिका खड़ी मिलेगी और सम्बोधन का जिक्र आयेगा तो उसके आगे क़मर मेवाड़ी दस्तखत दिये मिलेंगे। सच तो यह है कि क़मर मेवाड़ी और सम्बोधन दोनों एक-दूसरे के पूरक, एक दिल दो दिमाग हैं। दोनों में से किसी एक, अकेले की कल्पना सम्भव नहीं है।

मुझे याद पड़ता है वह समय जब मैं उदयपुर में आया ही आया था, क़मर से मेरी साहित्यिक मैत्री बंध गई थी। उन दिनों वे एक पत्रिका निकालने का जुनून लिये कई मित्रों से सलाह-मशविरा कर रहे थे। इस बीच चेटक सर्कल के पिछवाड़े की दुकान के आगे एक भविष्य कथन करने वाले नांदिये के चारों ओर भीड़ देख मन में पत्रिका निकालने की हूंस लिए हम भी उसके हिस्से हो गये। कूबड़ निकला नांदिया बड़ा सजाधजा था। पीठ पर कलाबूती पलाण की आकर्षक झूल से एक जीभ निकली हुई जहां सबको विमोहित कर रही थी वहां उसके मुंह का मोहरा भी कौड़ियों, मनकों, सीपियों तथा छनछनाती घंटियों की गूंथन से सबके आकर्षण का केन्द्र बनी हुई थी। नांदिया हमारे सम्मुख आकर हां की स्वीकृति में अपनी गर्दन हिलाने लगा।

इस प्रकार 1966 में सम्बोधन का प्रकाशन शुरू हुआ और उसकी स्वर्ण सीढ़ियां बनाते 2016 में उसे निवृत्ति दे दी तब भी मैं उनके साथ था जब उन्होंने कहा कि अब आगे का रथ भैंसागाड़ी की तरह चलाने का कोई तुक नहीं है।

यह सब लिखने का प्रसंग 'क़मर मेवाड़ी रचना संचयन' पुस्तक है जिसका सम्पादन माधव नागदा ने बड़ी सूझबूझ और लगन से किया है। क़मर मेवाड़ी हमारे लिए इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हैं कि उन्होंने एक छोटे व्यक्ति की हैसियत से कांकरोली जैसे छोटे से गांव में एक छोटी सी पत्रिका निकालने का साहस कर अपने गांव को, अपने को और अपनी पत्रिका को भी बड़े मुकाम पर पहुंचाया।

क़मर मेवाड़ी हमारे लिए इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हैं कि उन्होंने एक छोटे व्यक्ति की हैसियत से कांकरोली जैसे छोटे से गांव में एक छोटी सी पत्रिका निकालने का साहस कर अपने गांव को, अपने को और अपनी पत्रिका को भी बड़े मुकाम पर पहुंचाया।

छोटी सी पढ़ाई कर छोटे से प्राथमिक विद्यालय में सौ रूपल्ली की छोटी नौकरी करने वाले की होनहार हिम्मत ने ही क़मर की कमर को टेढ़ी नहीं होने दी जबकि पापड़ तो कई बेलने पड़े जिनका जिक्र यदाकदा क़मर मुझे भी करते रहे और माधव नागदा ने भी अपने शुरूआती वक्तव्य में किया है।

वे लिखते हैं, विज्ञापन के लिए साइकिल लेकर दुकान-दुकान भटकना, बदले में झूठे आश्वासन। विज्ञापन छपने पर टॉल मालिक उदारतापूर्वक बोले, मेरे पास तो पैसे नहीं हैं। इन लकड़ियों में से जितनी ले जा सकें, केरियर पर बांधकर ले जाइये। एक दूसरे पूरे पृष्ठ के विज्ञापनदाता ने बेरहम ठहाका लगाते कहा, सौ रूपये तो आप मुझे दें क्योंकि मेरी दुकान का विज्ञापन छपने से आपकी पत्रिका की प्रतिष्ठा बढ़ी है। (पृ. 8)

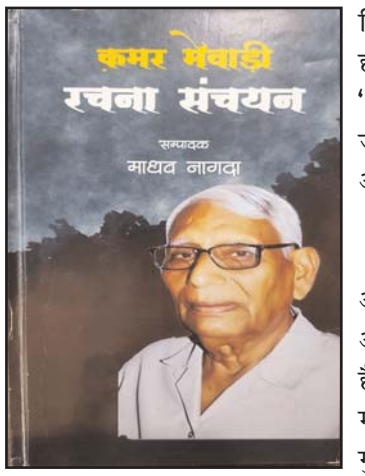

इसके बावजूद क़मर अपनी जन्मभूमि के लोगों की उनके प्रति जो आत्मीयता तथा देन रही है उसे सदैव याद रखे रहते हैं। सम्बोधन के 25 वर्ष पूरे होने पर मैंने दैनिक जय राजस्थान में लिखा था- 'क़मर मेवाड़ी ने एक अचरज भरी बात यह भी कही कि पत्रिका के प्रकाशन के पीछे कांकरोली-राजसमंद की उस जनता की अधिक दिलचस्पी और आत्मीय लगाव है जो अपने आंगन में लगाये गये पेड़ की तरह उसे फलते-फूलते देखती रहना चाहती है इसलिए सम्बोधन साहित्यकारों के साथ उस जमात का भी है जो सृजन की मूल उत्स, उत्प्रेरक और अनुप्राण मानी जा सकती है।' इसका जिक्र इस पुस्तक में भी हुआ है। (पृ. 289)

एक कवि और कहानीकार के रूप में क़मर मेवाड़ी का साहित्यिक अवदान प्रमुख रहा। इसमें वे मुश्किल समय में साथ देने वाली कविता को अन्याय और शोषण के खिलाफ लड़ाई में प्रयुक्त हथियार मानते कहते हैं- 'गांठ का बहुत कुछ चूक जाने के बावजूद कविता आज भी मेरे पास है।' (पृ. 15)

अपने को मामूली आदमी मानते क़मर मेवाड़ी अपने आत्मकथ्य में लिखते हैं- 'मेरा बचपन बहुत ही मस्ती और खिलदड़ेपन में गुजरा है। कहानी के लिए मैं काल्पनिक पात्रों का सृजन नहीं करता, न कहानी लिखने के लिए कोई रूपरेखा बनाता हूं। कहानियां मेरे आसपास गुजरती रहती हैं। कई चेहरे इर्दगिर्द मंडराते रहते हैं। मैं किसी की परवाह नहीं करता। न कहानियों की न चेहरों की।' (पृ. 24)

क़मर मेवाड़ी एक मस्त फक्कड़ और अपने पराये को समझने वाले स्पष्ट और खरे इन्सान हैं। वे गुस्सा भी करते हैं। गलत बातों पर ताल ठोकने में पीछे नहीं रहते और नाराज होने पर उसे पूरी तरह जाहिर किये बिना भी चैन नहीं लेते पर वे उतने ही भावुक, संवदेनशील और यारबाज भी हैं। स्पष्ट कथक्कड़ इतने कि कोई बात कहने की बेबाकी में तालठोकाई करने में भी कोई संकोच नहीं करते। लिखते हैं, पिताजी के बक्से में रखी चन्द्रकांता संतति, हातिमताई, अमीर हमजा, किस्सा तोता मैना और किस्सा साढ़े तीन यार का पढ़ते-पढ़ते मैं कम उम्र में ही बालिग हो गया। पिताजी ने इतना जलील किया कि शायद दुनिया में किसी बाप ने अपने किसी बेटे को किया होगा। एकबार तो चोर की तरह दोनों हाथ बांधकर मुझे पूरे कस्बे में घुमाया था। (पृ. 27)

'व्यक्तित्व की खुशबू' नामक खण्ड में क़मर मेवाड़ी पर लिखे आलेखों में नंद चतुर्वेदी (युवजनों की तरह सपने देखते क़मर मेवाड़ी), बृजेन्द्र रेही (राजसमंद झील पर नक्काशी की तरह हैं क़मर मेवाड़ी), कमर जैसा दुर्लभ दोस्त (डॉ. महेन्द्र भानावत) तथा स्वयंप्रकाश (गली-गली मेरी याद बिछी है) क़मर से जुड़े आजीवन मैत्री सम्बन्धों के अलख दस्तावेज हैं। 'कसौटी पर कृतित्व' में रचनाकार क़मर लिखित कहानी, कविता, उपन्यास, संस्मरण पर विविध विद्वानों की पर्यालोचनाएं उनके उदात्त रचना कर्म को रेखांकित करती हैं। 'संस्मरण' में क़मर लिखित मणि मधुकर, स्वयंप्रकाश, राजेन्द्र यादव तथा निरंजननाथ आचार्य पर आत्मीयता की रसभीनी यादें हैं तो 'विचारों का ताप' में क़मर मेवाड़ी से लिये गये साक्षात्कार संजोये गये हैं। इसी तरह 'सृजन का आलोक' स्तंभ में क़मर मेवाड़ी लिखित सात प्रतिनिधि कहानियां, पन्द्रह कविताएं तथा 'वह एक' नामक उपन्याश अंश है। सभी रचनाओं के सांगोपांग संचयन में कथाकार माधव नागदा की मनस्वी कारीगरी का कमनीय वैभव झलकता है।

कुल 312 पृष्ठों में क़मर मेवाड़ी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को बेहतरीन ढंग से दर्शाती यह पुस्तक भावना प्रकाशन, 109-ए, पटपड़गंज गांव, दिल्ली-110091 से प्रकाशित 795 रूपये मूल्य लिये है। **-म. भा.**

'मीडिया संसार' पर एक गंभीर उम्दा पुस्तक

'संचार साधनों के विकास की कहानी साधारण पत्रों के धातु के ढले अक्षरों को जोड़ कम्पोज कर ट्रेडल मशीन पर छपने से लेकर कम्प्यूटर और ऑफसेट मशीन तक आ पहुंची है। हाथों से समाचारपत्र को फोल्ड करने में लगने वाले लम्बे समय और मानवश्रम-शक्ति की बचत होकर सीधे मशीन में छपकर फोल्ड होकर निकलने लगे हैं। रात को अखबार तैयार होते ही छपते-छपते इन्टरनेट पर अपलोड हो पूरी दुनियां में पहुंच जाते हैं। विविध सरोकारों से जुड़ा मीडिया आज मुकम्मल उद्योग बन चुका है।

डॉ. प्रभातकुमार सिंघल वरिष्ठ पत्रकार, जनप्रिय जनसम्पर्ककर्मी तथा पत्रकारिता क्षेत्र के गंभीर लेखक हैं। मीडिया संसार की नई-पुरानी सभी विधाओं और विकासवती धाराओं के वे प्रत्यक्षदर्शी कलमधनी रहे हैं। लेखन के अलावा पर्यटन एवं फोटोग्राफी में उनकी जीवन्त दिलचस्पी है।

प्रस्तुत ग्रंथ 'मीडिया संसार' में मीडिया जगत से जुड़ी पत्रकारिता और संचार माध्यमों के विविध पहलुओं पर उनके अपने विचार-मंतव्यों के साथ इस क्षेत्र के नामचीन लेखकों के विविध विषयपरक लेखों के संग्रह से इसका महत्त्व विद्वानों, जनसम्पर्क से जुड़े व्यक्तियों तथा शोधार्थियों के लिए बड़ा उपयोगी तथा प्रेरक है।

डॉ. सिंघल ने पुस्तक के प्रारम्भ में अपने लेखकीय वक्तव्य में स्पष्ट कर दिया है, 'संचार साधनों के विकास की कहानी साधारण पत्रों के धातु के ढले अक्षरों को जोड़ कम्पोज कर ट्रेडल मशीन पर छपने से लेकर कम्प्यूटर और ऑफसेट मशीन तक आ पहुंची है। हाथों से समाचारपत्र को फोल्ड करने में लगने वाले लम्बे समय और मानवश्रम-शक्ति की बचत होकर सीधे मशीन में छपकर फोल्ड होकर निकलने लगे हैं।

रात को अखबार तैयार होते ही छपते-छपते इन्टरनेट पर अपलोड हो पूरी दुनियां में पहुंच जाते हैं। इस विकास यात्रा के साथ-साथ रेडियो, दूरदर्शन, टीवी चैनल्स, इन्टरनेट जैसे माध्यमों की यात्रा भी समानान्तर चलती रही। विविध सरोकारों से जुड़ा मीडिया आज मुकम्मल उद्योग बन चुका है। पूरा समाचारपत्र इन्टरनेट से तैयार हो जाता है।' (पृ. 12)

पुस्तक की भूमिका के रूप में भोपाल के माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. संजय द्विवेदी का यह कथन कम उल्लेखनीय नहीं है। वे लिखते हैं- 'भारतीय मीडिया का यह सबसे त्रासद समय है। भारतीय मीडिया आजादी के आन्दोलन में छिपी अपनी गर्भनाल से एकबार फिर रिश्ता जोड़ेगा और उन आवाजों का उत्तर बनेगा जो उसे कभी पेस्टीट्यूट, कभी पेड न्यूज तो कभी गोदी मीडिया के नाम पर लांछित करती हैं।'

इस पुस्तक में आज की पत्रकारिता के लिए कुछ उपयोगी टिप्स दिये गये हैं। जनसम्पर्क के प्रारम्भ और उसके उद्भव-विकास की चर्चा के माध्यम से हमारी परम्परा से अवगत कराया गया है।

पत्रकारिता के कौशल के बारे में बातचीत की गई है और विद्वान लेखकों के आलेख हैं जो विविध विषयों पर हमारा ज्ञानवर्धन करते हैं। ऐसी किताबें पत्रकारिता, कला, साहित्य और सृजन की दुनियां को ज्यादा लोकतांत्रिक, ज्यादा विचारवान, ज्यादा संवेदनशील और ज्यादा मानवीय बनाती हैं।'

साहित्यागार, धमाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 से प्रकाशित 232 पृष्ठीय पुस्तक की कीमत 350 रूपया है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

स्मृतियों के शिखर (133) : डॉ. महेन्द्र भानावत

मर कर जीने वालों ने क्या-क्या देखा परलोक में

जन्म और मृत्यु का प्रकरण ऐसा है जिसके सम्बन्ध में जितना सुनो उतना ही रहस्य-रोमांच बन आता है। शास्त्रों ने और विद्वानों ने बहुत कुछ कहा है। ऋषि-मुनियों-योगियों और साधकों ने अपनी बीती घटनाएं सुनाकर अचरज और अजब-गजब का कम कमाल नहीं दिया। तांत्रिकों की दुनियां अपना अजूबा अलग लिए है। लोकजीवन के किस्से कई रातों को सफेद-काली कर दें तो भी पार नहीं पाया जा सकता। जन्मजन्मान्तर से ही पूर्वजन्म और पुनर्जन्म पहेली बना हुआ है।

ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो मर कर पुनर्जीवित हुए हैं और उसके बाद पन्द्रह-बीस बरस से लेकर चालीस-पचास बरस तक जिये हैं। आज भी जी रहे हैं। सारा मोहल्ला और गांव उनका साक्षी है। वे कहां गये! कैसे गये! कौन उन्हें ले गया! उन पर क्या बीती और वे वापस क्यों धरती पर धकेल दिये गये! इन सबकी बड़ी दिलचस्प दास्तान है। कुछ लोग हैं जो कुछ भी नहीं बताना चाहते। उन्होंने जो कुछ देखा सब अलौकिक है। उनका ऐसा विश्वास है कि वह सब कुछ बता देने से उनकी उम्र कम हो जायेगी।

अधिक कौन नहीं जीना चाहता! मरना कौन चाहता है! अपनी शोधयात्राओं में मैंने ऐसे महात्मा देखे हैं जो अदृश्य आत्माओं से ही घिरे रहते हैं। उन्हीं से मन-ही-मन इशारों से बतियाते रहते हैं। उन दिव्य आत्माओं को भी देखा जो मनुष्य शरीर में धरती पर विचरण करती रहती हैं। पांच सौ-हजार बरस के महात्मा भी मिले गिरनार के पहाड़ों में, सोमनाथ मन्दिर के बाहर, बांसवाड़ा के जंगलों में, द्वारिका की धरती पर, चित्तौड़ के किले पर हरियाली अमावस्या के मेले में। कुछ देखते-देखते प्रकट हुए, बोले-चाले और देखते-देखते अलोप भी हो गये। कुछ को उनकी स्वीकृति से अपने कैमरे में भी बन्द किये। कुछ ऐसे थे जिन्होंने देखते-देखते अपना चोला बदल दिया। तब मुझे शास्त्रों और जनश्रुतियों का सत्य भी उतना ही तथ्यपूर्ण लगा।

आपने दिन अथवा रात में कुत्तों को आकाश की ओर अपना मुंह किये जोर-जोर से रोते हुए देखा होगा। कभी बिल्ली को रोते सुना होगा। इनका रोना इस बात का प्रतीक है कि कोई व्यक्ति मर गया है जिसे यम के दूत पकड़कर ले जा रहे हैं। कुत्ते-बिल्ली ही नहीं, सियाल, गाय, बैल, नाग और वे जितने भी प्राणी जिनकी आँखें रात को चमकती हैं, उन्हें ऐसे यमदूत दिखाई देते हैं। ये दूत उस जीव को तब तक पकड़े रहते हैं जब तक कि उसका शरीर पूर्णत: गल जलकर भस्म नहीं हो जाता । हिन्दुओं में मृतक को चिता देने के बाद जब शरीर पूरा जल जाता है उसके तीन घड़ी बाद ही यमदूत उस जीव को छोड़ता है पर मुसलमानों में वह चालीस दिन तक पकड़ा-जकड़ा रहता है।

कभी-कभी ऐसे बच्चे देखने-सुनने में आते हैं जिन्हें अपने पूर्वजन्म का सब कुछ ज्ञात रहता है। वे अपने माता-पिता, सगे-समधी और गांव वालों के सम्बन्ध में ऐसी बहुत सी बातें बताते हैं जो पूर्णत: खरी उतरती हैं। ऐसे बालक निश्चय ही विलक्षण बुद्धिवाले और पूर्वजन्म के ज्ञाता होते हैं पर जब वे अपने पिछले जन्म के सारे रहस्यों को उजागर करते पाये जाते हैं तब धीरे-धीरे उनको यह स्मृति-बुद्धि जगत्जननी द्वारा हर ली जाती है। फिर उन्हें कुछ भी याद नहीं रहता। वे सबकी तरह साधारण हो जाते हैं ।

आत्माएं जितनी होती हैं उतनी ही होती हैं। वे नश्वर नहीं होतीं। यह तो शरीर है जो नष्ट होता रहता है। हां, यह अवश्य होता है कि मनुष्यों की संख्या घटती-बढ़ती रहती है। ऐसी स्थिति में पशु, पक्षी, पेड़, पौधे, जलचर आदि के रूप में भी उनका जन्म होता रहता है।

मरणासन्न व्यक्ति को कभी-कभी अपने द्वारा किये गये कर्मों के प्रति पछताते प्रायश्चित करते हुए देखा होगा। ऐसे व्यक्ति भी देखने में आये होंगे, मृत्यु पूर्व जो कुछ कहने की स्थिति में नहीं होते मगर जिनकी आँखों से आंसुओं की बाढ़ बड़ी मुश्किल से रुकी होगी। ऐसे लोगों को अपने द्वारा किये गये सारे गलत कार्य चित्रपट की भांति स्मरित हो आते हैं। उनके लिए सिवाय आंसू बहाने के उनके पास और कोई चारा नहीं रहता।

कई लोग मरते दम तक ईश्वर की सत्ता को नकारते पाये जाते हैं। ऐसे लोगों की मृत्यु भी नहीं होती। वे बड़ी-से-बड़ी यातनाओं से गुजरते हैं। उनका शरीर सड़-गल जाता है। सड़ान्ध देने लगता है। उसमें कीड़े तक कुलबुलाने लग जाते हैं। फिर भी उसके अनास्थावादी होने के कारण इस जीवन से उसका छुटकारा नहीं होता। यह छुटकारा तब ही होता है जब वह ईश्वर, परमेश्वर अथवा खुदा में अपनी पूर्ण आस्था प्रकट करता है।

पति-पत्नी सात जन्म तक साथ-साथ रहते हैं। सात जन्म पूरे होने पर उनकी योनि बदल जाती है तब तक स्त्री स्त्री और पुरुष पुरुष बना रहता है। प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्धों के पीछे भी पूर्वजन्म की अतृप्त वासना-इच्छा रही है जो इस जीवन में पूरी हुई देखी जाती है। यह तो समाज है जो अपनी मानमर्यादाओं के कारण उनके लिए बाधक होता है। कई बार समाज-परिवार की बगैर परवाह चिन्ता किये महिला-पुरुष प्रेम विवाह कर लेते हैं अथवा निसंकोच प्रेमाचार करते रहते हैं तो कई ऐसे भी मिलेंगे जो समाज की मानमर्यादा अथवा अपनी इज्जत आबरू के बहाने आत्महत्या कर बैठते हैं जबकि यह सारा विधि विधान जन्म के साथ अदृश्य लिपिबद्ध किया होता है जिसके अनुसार ही सब कुछ होता घटता है। समाज में व्याप्त 'सात जन्म तक पीछा नहीं छोड़ूंगा', 'सात जन्म का खाया पीया निकाल दूंगा', 'सात जन्म की खबर ले लूंगा' जैसे मुहावरे भी इसी बात के पुख्ते प्रमाण हैं।

गलती कहां नहीं होती! इस लोक में ही नहीं, उस लोक में भी होती है। धर्मराज के सिपाही भी कभी-कभी गलती कर बैठते हैं। इसीलिए जिसे नहीं मरना होता है वह मर जाता है और उसी नाम-राशि का व्यक्ति जिसे मरना होता है, जीवित बना रहता है पर ऊपर जाकर जब लेखा-जोखा होता है तब सही स्थिति का पता चलता है। ऐसी हालत में उस व्यक्ति को तो पुन: मृत्युलोक में भेज दिया जाता है। वह जीवित जी उठता है और देखते-देखते उसी नाम का अन्य व्यक्ति देह त्यागता हुआ पाया जाता है। ऐसे मृतक जो पुन: जीवित हो उठते हैं, उनमें किसी के हाथों में लोहे के चने होते हैं तो किसी के हाथों में सिन्दूर कुम्कुम् का लेप किया होता है।

ऐसे ही कुछ लोगों से मैं मिला हूं जिन्होंने अपनी आपबीती घटना मुझे सुनाई है। इन घटनाओं से जीवन और मृत्यु के बहुत सारे तथ्यों की जानकारी हाथ लगती है। यहां ऐसी ही जानकारी दी जा रही है जो राजस्थान से संबंधित है।

सालमगढ़ की माणकबाई जैन की 45 वर्ष पूर्व शादी हुई। एक माह पति का सुख देखा। कोई 16 वर्ष पहले माणकबाई बहुत बीमार हुई। खूब दवादारू की गई पर जी नहीं सकी। उसके मरने की बात पूरे गांव में फैल गई। अर्थी सजाई गई। दागिये इकट्ठे हो गये। जब उसे श्मशान ले जाया जाने लगा तो अचानचक वह जीवित हो उठी। लोगों ने उसे जीवित देख बड़ा आश्चर्य किया। माणकबाई भी अपने घर इतने लोगों को पाकर असमंजस में पड़ गई। औरतों ने पूछा कि कहां चले गये तब माणकबाई ने कहा- 'मैं तो ऊपर चली गई थी। वहां बड़े अजीब-अजीब लोग देखे। आग का ढेर देखा। उकलते तेल की कढ़ाइयां देखीं। वहां बड़े-बड़े चोपड़े देखे। चोपड़े बांचने वाले पंडत देखे। एक पंडत ने मेरा चोपड़ा देखा और कहा- 'तुम्हारी उम्र अभी बाकी है। वापस चली जाओ।' मैंने कहा- 'चली तो जाऊंगी मगर क्या निशानी होगी?' वह बोला- 'यह लो चने' और मेरे दोनों हाथो में लोहे के चने थमा दिये।'

यह किस्सा सुनाते ही माणकबाई ने अपनी दोनों मुट्ठियां खोलीं तो लोहे के चने निकले। आज माणकबाई की उम्र करीब 60 बरस की है। वह बड़े संघर्षों में अपना जीवन व्यतीत कर रही है।

छींपों के आकोला के पास पीताम्बरपुरिया के फतहगिरि गुंसाई की मृत्यु हो गई। गाजेबाजे के साथ श्मशान ले गये। उन्हें गाड़ने के लिए तीन बार खड्डे खोदे गये। पहले दो खड्डों में मुर्दे गड़े निकले। तीसरा खड्डा खोदा गया तो चट्टान निकली। इसी में उन्हें गाड़ा गया। जब गले तक मिट्टी भर दी गई तो अचानक उनकी आवाज निकली- ' मुझे बचाओ।' यह सुनते ही लोग भागे कि गुंसाई भूत बन गये हैं। तब गुंसाई बोले- 'अरे भागो मत। मुझे बचाओ। मेरा जीव घबरा रहा है। यह सुन कुछ लोगों ने पीछे देखा। वे गये मिट्टी हटाई गई। गांववालों को पता चला कि गुंसाईजी जी गये हैं तो सारा गांव उलट पड़ा। बैंडबाजे मंगवाये गये और उन्हें बड़ी आवभगत के साथ लाया गया। इस घटना के बाद फतहगिरि 20 बरस जीवित रहे।

आकोला के मोहनलालजी के यहां फतहगिरि का आना जाना होता रहा। बातचीत के दौरान फतहगिरि ने मोहनजी को बताया, 'दो दूत आये सो उन्हें लेगये। वहां एक गाड़ा भरकर पोथे लाये। उन पोथों में मेरा नाम खोजा गया तो उन्हें नहीं मिला। इस पर उन यमदूतों से कहा गया कि इनका तो नाम हो नहीं है। इन्हें क्यों ले आये! जाओ इन्हें वापस ले जाओ। इस पर यमदूतों ने मुझे लोहे के चने दिये और वापस मुझे धरती पर छोड़ दिया। मैंने जब आँख खोली तो मैं गड़ा हुआ पाया गया। मेरा जी घबराने लगा। यदि मुझे बचाने कोई नहीं आता तो घुट-घुट कर मेरा दम निकल जाता।'

इनके पास वाले लोहे के चने तो कइयों ने देखे। आज गुंसाईजी इस संसार में नहीं हैं। उन्हें मरे लगभग 10 बरस हो गये पर यह घटना आज भी कल जैसी ताजी बनी हुई है।

आकोला के इन्हीं मोहनलालजी के पिता पं. गोपीलालजी बड़े आध्यात्मिक व्यक्ति थे। 82 वर्ष की अवस्था में 25 फरवरी 1987 को उनका निधन हो गया। सन् 1976 में ये बहुत बीमार पड़े। इन्हें तब उदयपुर लाकर जनरल हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। एक रात वहां उनके प्राण जाते रहे। डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। लाश को आकोला ले जाने की तैयारी की गई। थोड़ी ही देर में देखा तो बासाब में प्राणों का संचार हो आया। डाक्टर को बुलाया गया तो उसे भी बड़ा अचरज हुआ। सारे मरीज चकित हो उठे।

बासाब की मृत्यु के पूर्व मैं जब छींपों के अध्ययन के लिए आकोला गया तो उन्होंने मुझे बताया, 'तब एक शक्ति स्वरूपा स्त्री आई जो मुझे ले गई। उसने लाल साड़ी पहन रखी थी और वह बड़ी खुशमिजाज थी। मैं वहां चला तो गया पर एक ऐसे बड़े पिंजरे में मुझे रख दिया गया जहां और भी कई लोग थे। मैं उनसे परिचय कर रहा था कि एक दिव्य आकृति आई और मुझे उस पिंजरे से बाहर निकाला और एक मल्ल को सौंप दिया। उस मल्ल ने मुझे जोर से उठाया और वहां से फैंका। मैं चिल्लाया और धरती पर धकेल दिया गया। मेरा आयुष्य बाकी था। सो अब तक जी रहा हूं।' डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' इसी परिवार से सम्बद्ध मोहनलालजी के सुपुत्र हैं।

आबूरोड़ के आकरा भट्टा का रहने वाला बाबूखां कायमखानी भी ऐसी ही घटना का शिकार हुआ। सुधारवादी विचारों के कारण बाबूखां ने कभी नमाज नहीं पढ़ी। शादी में भी फेरे किये। अपनी मृत्यु का इन्हें पूर्वाभास हो गया तब सभी समधियों को बुलाया और कहा, 'मेरी पत्नी यदि किसी के साथ पुनर्विवाह करना चाहे तो खुशी-खुशी करने देना। यदि नहीं चाहे और इसी घर में रहना चाहे तो आराम से रहने देना। इसे किसी बात की कोई तकलीफ न हो, पूरा ख्याल रखना।' ऐसी ही और कुछ भलावण देकर बाबूखां ने शरीर छोड़ दिया। गांववालों को इकट्ठा किया गया। शव को नहलाया गया। मैयत मंगवाई गई।

बाबूखां को ले जाने की बारी आई तो अचानक उसका शरीर हिलता नजर आया। देखा तो आँखें खुली हुई। बाबूखां वैसे ही उठ बैठा जैसे सोकर उठा हो। लोगबाग देखते ही रह गये कि यह सब कैसे क्या होगया। पूछने पर बाबूखां ने बताया, 'दो फरिश्ते आये सो उसे लेगये। घसीटते हुए ले गये। मैंने उनसे कहा कि मैं बहुत भूखा हूं। कुछ खाने को दो। उन्होंने जैसे मेरी बात सुनी ही नहीं। मैंने फिर कहा कि भूख के मारे मैं बुरी तरह मरा जा रहा हूं। कुछ तो खाने को दो। तब उन्होंने ऐसे सड़ेगले फल दिये जिन्हें देखते ही मुझे घृणा हो गई। वे खाने जैसे थे भी नहीं। बदबू मार रहे थे। मैंने नहीं खाये। कुछ देर बाद मुझे प्यास लगी तो पानी मांगा। उन्होंने कहा कि हुकुम नहीं है। मैंने कहा पानी के बगैर मैं मरा जा रहा हूँ तब वे ऐसा गंदला पानी लाये कि मेरे से नहीं पिया जा सका।

घसीटते-घसीटते वे मुझे खुदा के दरबार तक ले गये। वहां बाहर हजारों लोग बैठे हुए थे। सबकी बारी-बारी से पेशी हो रही थी। इतने में मेरी आवाज पड़ी। कहा गया कि इस बाबूखां को यहां क्यों ले आये। आगरा वाले बाबूखां को लाना था। मुझे वापस नीचे भेज दिया। यह घटना सन् 1960 में घटी। उसके बाद बाबूखां ने नियमित नमाज पढ़ना प्रारंभ कर दिया।

इसी क्षेत्र के ओर गांव के मानाजी गांची का दिन के दो बजे निधन हो गया। सगे समधी तया अन्य लोग इकट्ठे हो गये। गांव के ठाकुर साहब को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने कहलवाया कि माना मरा नहीं है। उसे श्मशान ले जाकर जला मत देना। लोगों को ठाकुर सा. की बात पर विश्वास नहीं हुया। उन्होंने जाकर अरज की कि हुकुम, माना तो टस से मस भी नहीं हो रहा है। मरा कैसे नहीं है, आप पधार कर उसे देख लें। ठाकुर सा. ने कहा कि तुम चिन्ता मत करो। मेरी बात भी मानो। यदि माना मर गया तो मैं उसके बराबर सोने का माना दे दूंगा। थोड़ा धैर्य रखो।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 दिसंबर 2021

सम्पादकीय

कहावतों में मुद्रा की अवस्थिति

कहावतें हमारे दैनिक जीवन की आवश्यक एवं अनिवार्य हिस्सा बनी हुई हैं। इनका प्रयोग हर तबके का व्यक्ति करता है। एक छोटी सी कहावत भी कई बार बड़ा अर्थ, बड़ी समझ और बड़ी समस्या का हल कर देती है। इनमें हमारे सांस्कृतिक सरोकारों तथा सामाजिक लोकाचारों के साथ ही जीवन परिवेश से जुड़े अनेकों संकेतों, सन्दर्भों, प्रसंगों तथा पर्यालोचनों के पहरूए अपनी दस्तक देते हमारा पथ प्रशस्त करते पाये जाते हैं।

इन कहावतों के माध्यम से हम इतिहास की प्राचीनतम पट्टिका की तह तक पहुंचने में कामयाब हो सकते हैं। आपसी तनातनी में बात जब बढ़ जाती है तो बनता काम भी बिगड़ा हुआ लगता है। ऐसी स्थिति में किसी को उधार दी गई रकम प्राप्त करने में भी अड़चन आ जाती है और सुनने को मिलता है- 'एक फूटी कौड़ी नहीं दूंगा।' इसका अर्थ है किसी समय फूटी कौड़ी मुद्रा के रूप में चलन में थी।

उसके बाद कौड़ी मुद्रा के रूप में अस्तित्व में आई। कंजूस व्यक्ति के लिए अक्सर 'चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय' कहावत तो सभी ने सुनी होगी। कौड़ी के बाद दमड़ी मुद्रा के रूप में चलन में आई। दमड़ी का पाट धेला ने लिया। आलसी व्यक्ति जब कोई हलन-चलन, कोई काम नहीं करता तब कहा जाता है- 'यह धेले भर का काम नहीं कर दिनभर मटरगश्ती करता रहता है।'

धेले के पग नपते-नपते पाई पर आसीन हुए। पाई-पाई के लिए मरना, पाई-पाई का हिसाब रखना, पाई-पाई के लिए जान देना जैसी और भी कहावतें पाई के महत्त्व को दर्शाती हैं। मेवाड़ में पाई ने पया तथा फोंतर्‌या नाम भी धराया। पया में भीलाड़ी पया वजनी तथा मोटापा लिये था जबकि फोंतर्‌या हल्का होता। ये लोहे के होते। फिर पैसा अस्तित्व में आया। एक आने में 12 पैसे होते। कहावत चली, एक आना री बारे पाई। आना से रूपया बना। सौलह आने का एक रूपया होता।

संक्षप में इसे यूं समझा जा सकता है- 3 फूटी कौड़ी की एक कौड़ी। 10 कौड़ी की एक दमड़ी। 2 दमड़ी का एक धेला। 256 दमड़ी की 192 पाई। 128 धेले के 64 पैसे। मेवाड़ महाराणा सरूपसिंह ने चांदी का रूपया चलाया जो सरूपशाही रूपया, कल्दार कहलाया। अन्तिम महाराणा भूपालसिंहजी संध्या भ्रमणार्थ जाते तब रास्ते में मांगने वालों को चांदी की एक-एक चवन्नी देते। यह कहावती नारा भी चला- 'एक चवन्नी चांदी की, जै बोलो महात्मा गांधी की।' चवन्नी रूपये का चौथा हिस्सा होती जो पावली कहलाती। दो चवन्नी मिलकर अठन्नी होती, रूपये का आधा हिस्सा। इसे अधेली कहते। कहावत चली- 'अधेली के पावली चालो बेटा मावली।'

सभी महत्त्वपूर्ण हैं वर्ष, घंटा, मिनट, सैकंड

यदि आप वर्ष का मूल्य जानना चाहते हो- तो उस किसान से पूछो जिसके खेत वर्षा के अभाव में सूखे पड़े हैं।

यदि आप महिने का मूल्य जानना चाहते हो- तो उस गर्भवती महिला से पूछो जिसने एक माह पहले बच्चे को जन्म दिया हो।

यदि आप सप्ताह का मूल्य जानना चाहते हो- तो उस कर्मचारी से पूछो जिसका साप्ताहिक वेतन के बिना गुजारा करना कठिन हो गया हो।

यदि आप एक दिन का मूल्य जानना चाहते हो- तो उस श्रावक से पूछो जो सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करने से वंचित रह गया हो।

यदि आप एक घंटे का मूल्य जानना चाहते हो- तो उस लड़की से पूछो जिसका मंगेतर शादी से एक घंटे पहले ही स्वर्गवासी हो गया हो।

यदि आप एक मिनिट का मूल्य जानना चाहते हो- तो उस बीमार से पूछो जो डाक्टर के एक मिनट विलंब से आने से दम तोड़ चुका हो।

यदि आप एक सैकण्ड का मूल्य जानना चाहते हो- तो दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेने वाले उस धावक से पूछो जो एक सैकण्ड की देरी से पहले स्थान पर आने से पिछड़ गया हो।

- मुनि मनितप्रभसागर

प्रेरणा के स्त्रोत

- नर्मदाप्रसाद उपाध्याय-

स्मृतियों का कमाल :

पश्चिम में सबकुछ केवल देह है। देह की भंगिमा ही नृत्य है। इसका सम्बन्ध धर्म या ईश्वर से नहीं है लेकिन नृत्य में जो लय है, गति है, वह हर कलाकार को मिली हुई ईश्वरीय देन है। यजुर्वेद में व्यायाम को भी नृत्य का प्रकार माना गया है। इन शिल्पों में व्यायाम की अनेक मुद्राएं हैं।

स्मृतियां अद्‌भुत होती हैं। वे इतनी भारी भी होती हैं कि उन्हें तोलने के बाट अभी तक नहीं बन पाए और वे हलकी भी इतनी होती हैं कि उनके सामने हवा भी भारी लगती है। पेरिस में फूल गूंथे नहीं जाते, सहेजे जाते हैं। सौरभ हो, सौंदर्य हो या धरोहर; इनकी अस्मिता इनके सहेजे जाने में ही है। इन अर्थों में पेरिस फूलों और विरासत को सहेजने का शहर है।

नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस की तेजस्विता का सूर्य है। उसने फ्रांस के शौर्य के झण्डे पूरे विश्व में गाड़ दिये थे। उसका कद छोटा था। एकबार एक पुस्तक जो उसके ग्रंथालय में ऊपर रखी थी और उसे उठाने के लिए उसका हाथ नहीं पहुंच रहा था तब उसके जनरल ने कहा कि इसे मैं उठा देता हूं क्योंकि मैं आपसे ऊंचा हूं। नेपोलियन ने उसे रोकते हुए कहा था- 'जनरल, तुम मुझसे ऊंचे नहीं, लम्बे हो।' वह कद में जितना छोटा था उसका अभिमान उतना ही विशाल था। इसलिए फ्रांसीसियों ने उसके कद के आकार की नहीं बल्कि उसके दर्प की विशालता के आकार की कब्र इनवेलिड्स में बनाई है।

पेरिस में फूल पीछा नहीं छोड़ते। यहां प्रायः हर रियू पर जगह-जगह फूलों की दुकानें सजी रहती हैं। इन दुकानों पर बड़े-बूढ़े, जवान और बच्चों की भीड़ लगी रहती है जो इन फूलों को देखते हैं, खरीदते हैं और इनके गुलदस्तों को भेंट में देते हैं।

साहित्य के सरोवर तक फूल ही फूल हैं लेकिन हम फूलों को सहेजते नहीं उन्हें गूंथ देते हैं। माला में और वे फिर गलों में लटककर निष्प्राण हो जाते हैं। पेरिस में फूल गूंथे नहीं जाते, सहेजे जाते हैं। सौरभ हो, सौंदर्य हो या धरोहर; इनकी अस्मिता इनके सहेजे जाने में ही है। इन अर्थों में पेरिस फूलों और विरासत को सहेजने का शहर है।

वहां से लौटे तो स्मृतियों की ऐसी गठरी साथ लेकर आए हैं, जिनका न कोई बोझ है न जिसका हवाई अड्डे पर वजन करना पड़ा और न ही जिन्हें रखने के लिए कहीं जगह तलाश करनी पड़ी। स्मृतियां अद्‌भुत होती हैं। वे इतनी भारी भी होती हैं कि उन्हें तोलने के बाट अभी तक नहीं बन पाए और वे हलकी भी इतनी होती हैं कि उनके सामने हवा भी भारी लगती है।

पत्रिकाएं : अक्षर की देह अमर :

एक ऐसी देह होती है जिसके भाग्य में उसका निष्प्राण होना लिखा होता है लेकिन एक देह ऐसी होती है जो कभी निष्प्राण नहीं होती जिसकी आंखों की पुतलियां सदैव सवेरों को तलाश करता है। जिसके कान अपने आसपास के सरोकारों की हरेक आहट को सुनते हैं और जिसका कण्ठ कभी मौन नहीं होता।

यह माना जाता है कि भारतेन्दु के समय से ही साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन की सधी-बधी परम्परा विकसित हुई। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ईसवी सन् 1867 में 'कविवचन सुधा' को प्रकाशित किया। इसके बाद 'हरिशचन्द्र मैगजीन' जो बाद में 'हरिशचन्द्र चन्द्रिका' के नाम से प्रकाशन हुआ। उन्होंने 'बाला बोधनी' नामक एक पत्रिका भी प्रकाशित की जो महिला सुधार पर केन्द्रित थी। 'कविवचन सुधा' के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित होता था, 'अपधर्म छूटै सत्व निज भारत गहै।' इन पंक्तियों में भारत के सत्व की गरिमा का आख्यान था।

साहित्य अमृत, समावर्तन, समकालीन साहित्य, दस्तावेज, वागर्थ, भाषा, नया ज्ञानोदय, अहा! जिन्दगी, तद्‌भव, अकार, हंस, कथादेश, आलोचना, पाखी, परिक्रमा, आजकल, साक्षात्कार व अक्षरा जैसी साहित्यिक पत्रिकाएं निकल रही हैं। उनमें हमारे आज के साहित्य की विभिन्न विधाओं में किए जा रहे सृजन को देखा जा सकता है। कला पर केन्द्रित पत्रिकाएं, जैसे 'कला समय', 'कला संवाद' व 'कला प्रयोजन' भी निकल रही हैं तथा इतिहास पर केंद्रित 'इतिहास बोध' नामक पत्रिका भी इलाहाबाद से प्रकाशित हो रही है।

संस्मरण :

मुझे स्मरण हो आता है उस प्रसिद्ध साक्षात्कार का जो 'राग दरबारी' के रचनाकार स्व. श्रीलाल शुक्ल ने पं. विद्यानिवास मिश्र से लिया था। मुझे श्रीलालजी ने अवगत कराया था कि यह इंटरव्यू उन्होंने लखनऊ रेडियो के लिए लिया था तथा इंटरव्यू लेने से पहले उन्होंने पंडितजी के पूरे साहित्य का तीन माह का अध्ययन किया था तथा अनेक बार उनसे अनौपचारिक भेंट कर चर्चा भी की थी। यह सौभाग्य मुझे भी अनेक बार मिला है जब मैंने देशी और विदेशी विद्वानों के साक्षात्कार लिये हैं।

वह साक्षात्कार जो तुरन्त लिपिबद्ध होकर प्रकाशित नहीं होता और स्मृति में रह जाता है तथा संबंधित व्यक्तिपरक से जुड़ी घटनाएं जो मानस में बनी रहती हैं तथा जो एक समय के अंतराल के बाद कागज पर उतरती हैं तब वह संस्मरण हो जाता है। इस तरह का साक्षात्कार और संस्मरण में समय के अंतराल का अंतर है जो इन्हें पृथक-पृथक विधा के रूप में स्थापित करता है। अनेक बार ऐसा भी होता है कि संस्मरणों में वैसे ही संवाद उतरते हैं जो साक्षात्कार होते समय किये गए होते हैं लेकिन वे संवाद चूंकि स्मृतियों के माध्यम से उतरते हैं इसलिए वे साक्षात्कार नहीं रहते, संस्मरण हो जाते हैं।

'समावर्तन' इस सम्बन्ध में विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि इस पत्रिका के प्रत्येक अंक में किसी रचनाकार या कलाकार का साक्षात्कार प्रकाशित होता ही है।

घूमते घामते राजूनाथ जोगी

मजीरों के सहारे परशुराम तथा बाबा रामदेव के भजन गाते 15 दिसम्बर को राजूनाथ जोगी पार्श्वकल्ला ऑफिस से गुजरा तो बातचीत में उसने बताया कि माता-पिता बचपन में ही गुजर गये। कोई साधु मिल गया तो उसके साथ हो गया।

उम्र दस-पन्द्रह वर्ष बताई पर बड़ा हंसमुख लगा और कहीं चेहरे पर असहाय, दुःख तथा निराशा का भाव नहीं देखा। जयसमंद के पास बरोड़ा गांव का जिक्र करता है और अपनेआपको रमता जोगी बताता है। उज्जैन महाकालेश्वर जाकर वहां के साधु समाज का रंगढंग देख चुका है और उनसे प्रभावित भी है। अभी उसके साथ में आठ-दस जोगियों का सहारा है। भविष्य में अच्छा नाथ बनने की उम्मीद रखता है।

डॉ. महेन्द्र भानावत के साथ राजूनाथ जोगी

अपना देश अपनी संस्कृति

प्रियतम संबंधी राजस्थानी लोकजीवन में व्याप्त विविध सम्बोधन

अंगा रा उदार, अंतर कपटी, अंतर रौ छकियौ। अंतर रौ फूंबौ, अंतरियौ बनड़ौ, अंधारा घर रौ चांनणौ, अंधारे घर रौ पावणौ, अड़बोलौ, अचपळौ, अचूकरा बोलणौ, अजरामर, अनवी राजा, अनेक गुण निधांन, अनोखा कंवरजी, अमी री निजर, अलबेलौ, अलबेलौ ओठी, अलवलियौ, अलवलियौ असवार, असाढ़ा रौ इंदर। आंखड़ल्यां रौ ठार, आंख्यां रा अंजण, आंख्यां रा काजळ, आंख्या री जोत, आंटीलौ, आतम रा आधार, आलीजा, आलीजा अलबेला, आलीजौ, आलीजौ भंवर, आसा राय।

ईसर, उक्त्यां रा आगार, उछांछळौ, उमराव, उळज्यौ रेसम, ऊगता भांण, ऊगता सूरज, ऊगते सूरज रौ तेज, ऊजल दंतौ, ऊजल दंतौ कानूड़ौ, ऊनाळै रौ आंबौ। कंठ रा आभरण, कंथ, कंवरजी, कपूर जेहा सीतळ, कमधजियौ, कमोदणी रौ चांद, कस्तूर्या म्रग, कस्तूरी जेहा सुगंध, काचै किरसलियै रौ रूप, कान्ह भंवर, कानां रा कुंडळ, कामणगारा, कामदेव रा अवतार, काया री कोर, काळलै री कूंप, केतकी रा कंत, केतकी रा खंभ, केवड़ा जिसा सुवास, केसर रा क्यारा, केसर वरणौ, केसरिया सिरदार, केसरियौ, केसरियौ बनड़ौ, केसरियौ बालम, केसरियौ भरतार, कोटड़ियां रौ रूपक, कोडीलौ। खट दरसण पोखण, ख्यालीड़ौ, खावंद।

गंगाजळ जेहा पवितर, गंगा जेहा निरमला, गंध रा गैंद गुलाब, गऊ विरामण के प्रतपाल, गढ़पतिया, गांवळियौ मोट्यार, गाडाळ, गाढ़ा मारूजी, गामेती, गायड़मल, गाहड़ रा गाड़ा। गिणगौर रौ ईसर, गुड़ळौ वादळ, गुणग्राहीक, गुणां रा गंभीर, गुणां रा सागर, गुमानीड़ौ, गुलाब रा फूल, गैर गुमांनी, गोपां बिचला कान्ह, गोपियां मांयलौ कान्ह, गौरी रौ बाळमौ, गौरी रौ सूरज।

घण जांण, घण नेहालू, घण बिलमाऊ, घण रूपाळू, घर संकाळू, घण हंसा, घण हेतालू, घर धणी, घर मंड, घर रौ आधार, घुड़लां रौ असवार, घुड़लां रौ सिणगार। चंदन जेहा सुगंध, चंदा जेहा निरमला, चंपा जेहा वर्ण, चंपा रौ फूल, चंवरी रौ रूप, चढ़ते तेज, चतर, चतर रौ चांद, चतुर बुद्ध रौ जाण, चतुर सुजांन, चवदै विद्या रा जांणणहार, चित्तौड़ौ, चिरंजीवी, चुड़ैल रौ रूप, चुड़ैल रौ सिणगार, चूनी जेहा लाल रंग, चूनी जेहा सुरंग, चौमासै रौ चंपौ। छत्तरधारी, छळियौ, छैल, छैल छबीलौ, छैल भंवर। जग मोवणौ, जला मारू, जलाल, जलालौ, जलौ, जसलोभी, जालम जोध, जीव री जड़ी, जीव रौ आसरौ, जुग वाल्हा, जोड़ी रा भंवर, जोड़ी रौ जलौ, जोड़ी रो जोधौ, जोड़ी रौ भरतार, जोड़ी रौ वर, जोबन रौ जोड़। झिलती जोड़ रा झुकता बादळ।

टोळी मांय सूं टाळमौ, टोळी रौ टीकायत। डोडा जेहा सुघाट। ढळकती नथ रा मोती, ढोलौ। तन रौ ताईतियौ, तारां बिचलौ चांद, तुनक मिजाजी। थोड़ा बोली रौ सायबौ। दरियाव री लहर, दिन दुल्हौ, दिलजानी, दिसड़ी रौ दिवलौ, दुखभंजक, दुनियां रौ दीपक, दुसमणां रौ साल, देसोती। धण रीझालू, धण रौ धणी, धण रौ सायबौ, धण धरती सो धीमौ, धव, धू ज्यूं अवचळ, धींगड़मल। नखराळौ, नटवरियौ, नणद रौ वीर, नणदल रौ वीरौ, नथड़ी रौ मोती, नवल बनौ, नेह रा नायक, नैणां रा लोभी, नैणां री जोत, नैणां रौ नीर, नैणां रौ वासौ, नैणां रौ हीर, नैन्ही नणद रौ वीर, नोखालौ।

पंच हजारी, पना मारू, परउपगारी, परण्यौ स्यांम, परणियौ, परदेसियौ, परदेसीड़ौ, परदेसी सूवटियौ, परभात रौ रूप, प्रभात रा प्रभाकर, प्रवाळा जेहा लाल, प्यारी रा सिरदार, प्यारौ, पातळियौ, पावणा, प्राण आधार, प्राणप्यारा, पिया, पिव, पीतम, पीरजादौ, पीवल, प्यारी रा ढोला, पूनम रा चांद, पूरण पुरस।

फरहरती फौजां रौ मांझी, फूटरमल, फूटरियौ, फूंल बनी रौ सायबौ, फूलां जेहा फूटरा, फूलां बिचलौ गुलाब, फूलां रा भारा, फौजां रौ मांझी, फौजां रा लाडा। बंका राजा, बत्तीस विवेकनिधान, बनौ, बरसतौ, बादळ, बरसाळू बादळ, बहत्तर कळा विचित्र, बहुगुणनिधांन, बहोत्तर कळा सुजांण, बांकड़ली मूंछाळौ, बांकी मूंछां रौ ढोलौ, बांह भूषण रा सिणगार, बाईजी रौ वीर, बागां मांयलौ केवड़ौ, बागां मांयलौ चपलौ, बागां रौ भंवर, बागां रौ मोर, बागां रौ सूवटौ, बाड़ी रा भंवर, बाजूड़ै री लूंब, बाढ़ाळौ, बाताळू, बादीलौ, बायां बिचलौ बीजळौ, बालम, बालमजी राज, बावनौ चंनण, बिलालौ, बींद, बींभळिया नैणां रौ, बोहौ जांण।

भंवर, भंवर आलीजा रा भूप, भंवर बना, भंवरिया पटा रौ, भरजोड़ी भरतार, भरतार, भाखर जिस्या भारी, भायां रौ लाडलौ, भालाळौ, भोळी बाई रौ वीर, भोळौ भंवरौ। मंडियोड़ौ मोर, मजलस रा मोड़, मजलस रौ जलाल, मतवाळौ, मदछकियौ, मदवा मारूजी, मनचोर, मनबसियौ, मनभरियौ, मनभायौ, मनमेळू, मन रौ तीमण, मन रौ धणी, मन रौ मीत, मन रौ राजा, मरद मूंछाळौ, मस्ताना भंवरजी, महलां मांयलौ दिवलौ, महलां रौ मान, महलां रौ मेवासी, माणक जेहा घण मोला, माणीगर, माणेस, माथा रा मैमद, माथा रा मोड़, मान-गुमानी ढोलौ, मानसर रा हंस, मारू, मारूड़ौ, मारूराय, मालकौ, मिजलस रौ मांझी, मिजाजी, मिजाजी ढोला, मिणधर, मिरगनैणी रौ बालमौ, मिसरी मेळौ, मिसरी रौ कुंझौ, मिसरी रौ डळौ, मीठा मारू, मीठा मेहमान, मुरधरियौ, मूंघा राज, मूंछांलौ, मेवाड़ौ, मेवासी, मेवासी ढोलौ, मैमद मोरियौ, मैहलां रा मंडाण, मोट्यार, मोटा राजवी, मोतियां री माळ, मोती जेहा ऊजळा, मोती जेहा ढळकता, मोवनगारौ, मौजां रा बगसणहार, मौजी सायबौ।

रंग दूल्हौ, रंगभीनौ, रंगरसियौ, रंग रा रंगीला, रंगीलौ बादळ रखड़ी रौ उजास, रजियौ, रणबंकौ रसियौ, रणरसियौ, राईवर, राका-चंद्र रै रूप, रागां रौ रसियौ, रागां रौ रीझाळू, राज, राजकंवर, राजन, राजनांमी, राज-सभा सिणगार, राजा, राजाणी, राजिंद, राजीड़ौ, राय, रायजादौ, राय बना, रावतियौ, रिंझवार, रिड़मल, रीझां-मौजा रा बगसणहार, रीसाळू, रीसाळू राज, रूड़ा राज, रूप रौ डळौ, रूप रूड़ौ, रूपै जैसौ उजास, रेसम रौ भारौ, रेसम रौ रेजौ, रेसमियौ, रैण रसियौ, रेणां रा सवादी।

लळवळियौ, लळवळियौ सिरदार, लसकरियौ, लहर लोभी, लाखां रौ लहरी, लाखां रौ लोड़ाऊ, लाखीणौ, लाखीणौ भरतार, लागणिया नैण रौ, लाडकड़ौ, लाडेसर, लाडौ, लाल नणद रौ बीर, लालां बिचलौ मोती, लौंग रा गुछा। वदते तेज, वदते हेज, वधती वेल, वर, व्हालौ, वाग-वाड़ी रा भंवर, वाचा अवचल, विसाल भाल रा टीका।

संसार रौ सुख, सइयां, सईजादौ बनड़ौ, सकल कळा प्रवीण, सकल गुण निधांन, सगां रौ सूवटियौ, सजनी रौ सूवौ, सभा-सिणगार, समंद री लहर, समंदां जिस्या अथाह, समुद्र जेहा गंभीर, सरद पून्यूं रौ चांद, सरद रौ चंद्रमा, सरदार, सरवत्र विवेक, सरवर रा हंस, सवाग रौ चीर, सवाग रौ धणी, स्यांम, स्वामी, सांवण रा धनक, सांवण रौ सिणगार, सांवणिया रौ मेह, सांवळियौ, सांवळियौ मोट्यार, सांवळियौ सिरदार, साईना।

साईना सिरदार, साजन, सातां बैनां रौ बीर, सायधण रौ चीर, सायबौ, सायरमल, सायर सोढ़ौ, सास सपूती रौ जायौ, सासू जायौ, सासू रौ मोबी, सासू सपूती रा जोध, सासू सपूती रा पूत, सासू सुगणी रा पूत, साहिबौ, सियाळै रा सूरज, सिरदार, सिर रा सेवरा, सींगड़मल्ल, सुंदर रौ सायबौ, सुखकरण, सुख रा सागर, सुख सेजां रा सिणगार, सुगणौ, सुगणौ साहिबौ, सुबंध रा सागर, सुहाग भाग रा तार, सुहाग भाग रा दायक, सूरज जेहा तेज, सूरज रौ साखियौ, सूरज समांन, सूर ज्यूं निकलंक, सूरवीर का सेल, सेजां बिचलौ स्यांम, सेजां रा धणी, सेजां रा सवादी, सेजा रा सरूप, सेजां रा सिणगार, सेजां रौ सुख, सेजां रौ सुखवासी, सेजां रौ सूवटियौ, सेलांणी भंवरौ।

सैंण, सैणां रा सुखदायक, सैणां रा सैंण, सैणां रौ लोभी सैणां रौ सूवटौ, सैणांळौ, सैल सिकार, सोजतियौ सिरदार, सोनै जेहा सुरंग, सोनै जेहा सोळमा, सोभा रा सिणगार, सोरमियौ, सोळमौ सोनौ, सोळा कळा सुजांण। हंजा, हंजा मारू, हंसला, हंसला हाली रा ढोला, हगामी ढोलौ, इठीलौ, हथळेवौ रौ हाथ, हरियाळौ बनड़ौ, हाटां मांयलौ हीर, हाथां रौ खतमी, हाथां रौ खामची, हिया रा हार, हियै री जोत, हिवड़ा रौ जीवड़ौ, हिवड़ै रौ चोर, हिवड़ै रौ हमीर, हिवड़ै रौ हार, हेताळू हंसलौ।

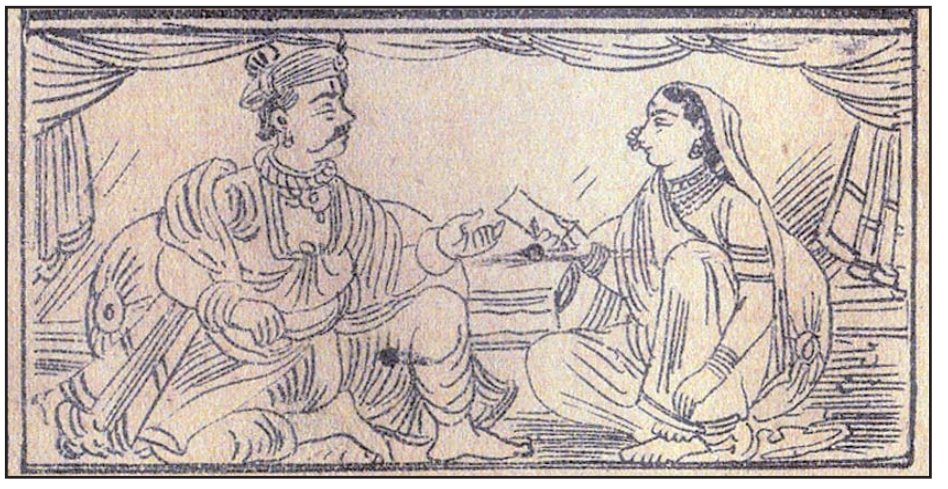

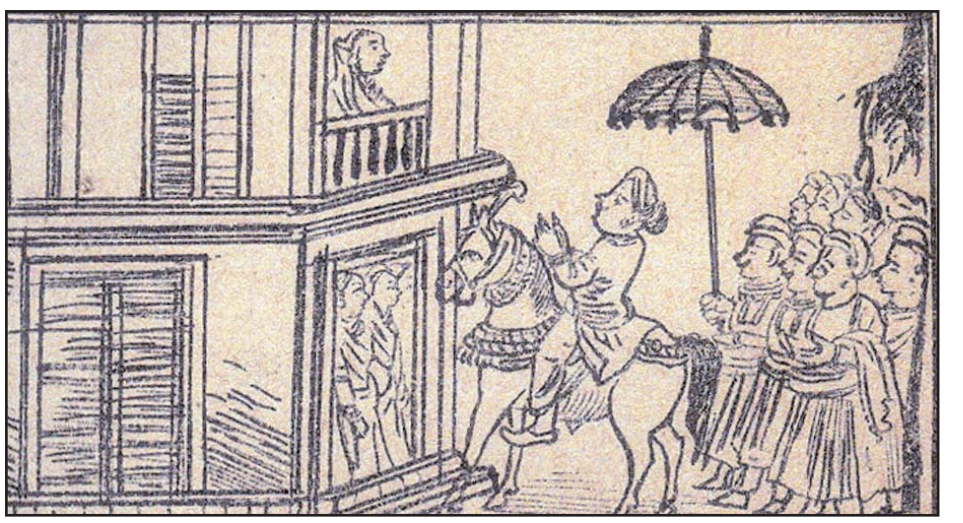

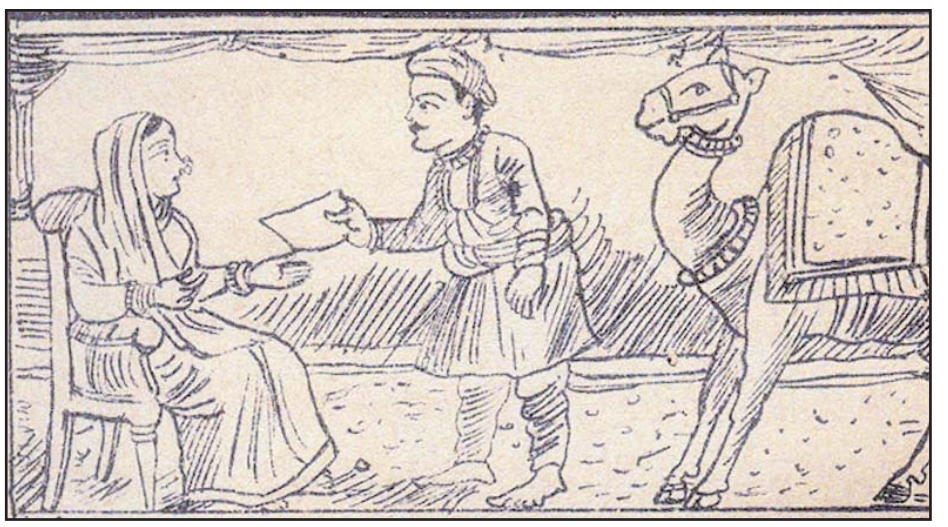

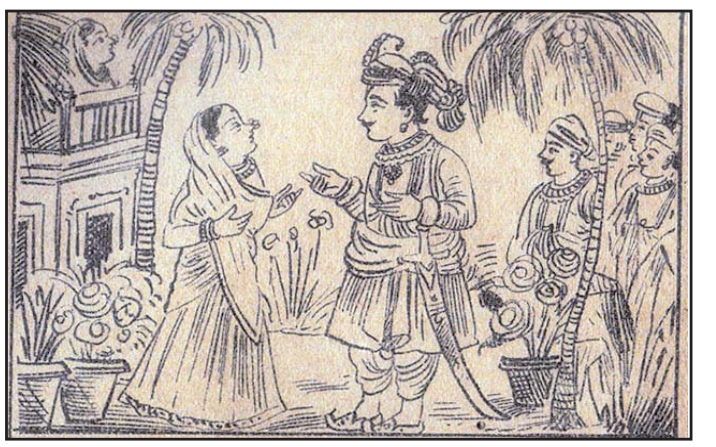

बाजार / समाचार

आतिथ्य उद्योग को प्रशस्त करेगी आईएचसीएल

उदयपुर (वि.)। भारतीय होटल्स कंपनी ने ऊर्जा संरक्षण के साथ-साथ ऊर्जा दक्षता के बारे में जागरुकता फैलाने की अपनी प्रतिबद्धता को फिर से पुख्ता किया है। आईएचसीएल के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट और ग्लोबल हैड-ह्यूमन रिसोर्सिस गौरव पोखरियाल ने कहा कि ऊर्जा संरक्षण आईएचसीएल के कारोबार का अभिन्न हिस्सा है। कंपनी की वार्षिक नवीकरणीय ऊर्जा खपत बहुत बढ़ गई है। हमारे कई प्रमुख होटल पवन और सौर ऊर्जा से चल रहे हैं। होटल उद्योग में पहली बार आईएचसीएल ने इंटरनेशनल फाइनेंस कॉर्पोरेशन के साथ सहभागिता की है। यह भागीदारी भारतीय आतिथ्य उद्योग हेतु सस्टेनेबल कूलिंग समाधानों के लिए की गई है। आईएचसीएल के होटलों ने लगभग 1,202,000,000 मेगा जूल्स ऊर्जा की बचत की है।

कविराव मोहनसिंह व्याख्यानमाला में 'गीत समय' का लोकार्पण

उदयपुर (ह.सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय द्वारा 3 दिसंबर को कविराव मोहनसिंह की स्मृति में 'संस्कृति, समाज व साहित्य' विषय पर आयोजित व्याख्यानमाला में वरिष्ठ आलोचक एवं कवि डॉ. जीवनसिंह ने कहा कि

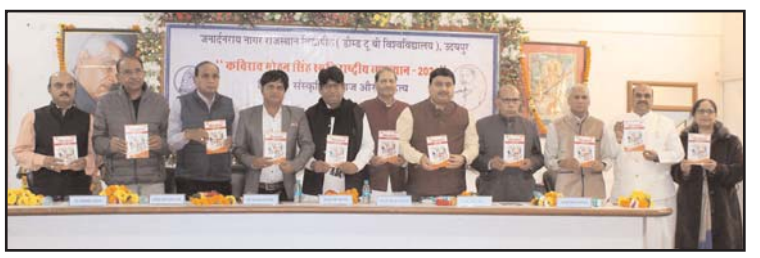

संस्कृति सूर्य की तरह है। मनुष्य संस्कृति एवं सभ्यता का निर्माण करता है पर संस्कृति की ओर ध्यान नहीं दिये जाने के कारण साहित्य का स्तर नीचे चला गया है।

कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि एक रचनाकार अपने भावों से संस्कृति का निर्माण कर साहित्य के माध्यम से उन्नति की ओर अग्रसर होता है। संस्कृति को बचाना है तो हमें प्राचीन वेद, पुराण की ओर लौटना होगा। कुलाधिपति प्रो. बलवंत एस. जॉनी ने चारण कवियों द्वारा लिखित साहित्य को महत्पूर्ण दस्तावेज बताते कालजयी कविताओं के निर्माण की आवश्यकता पर जोर दिया।

समारोह में गीतकार किशन दाधीच की काव्य-कृति 'गीत समय' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर भंवरलाल गुर्जर, डॉ. वसुंधरा मिश्र, डॉ. रमेश बोराणा, सुरेश शर्मा, डॉ. हेमशंकर दाधीच, डॉ. संगम मिश्रा, डॉ. उग्रसेन राव तथा डॉ. कुलशेखर व्यास ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

डॉ. जितेन्द्र को डॉ. ए. के. काला अवार्ड

उदयपुर (ह.सं.)। चंडीगढ़ में 10 दिसम्बर को गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के मनोरोग विभाग से प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. जितेन्द्र जीनगर को उत्तर भारत के सर्वोच्च अवार्ड, डॉ. ए. के. काला अवार्ड से नावजा गया। डॉ. जीनगर ने स्किज़ोफ़्रेनिया में शोध पर पाया कि इसके मरीजो में बीडीएनएफ की कमी होती है और इन्टरलीयुकिन 6 की बढ़ोतरी होती है। ये ईमबैलेंस इलेक्ट्रो-कनवलसिव थेरेपी के बाद ठीक हो जाता है।

डॉ. छंगाणी की स्मृति में शतरंज प्रतियोगिता

जैसलमेर (ह.सं.)। प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी की प्रथम पुण्यतिथि पर जैसलमेर में 2 से 6 दिसम्बर को आयोजित जिला ओपन शतरंज प्रतियोगिता में ओपन वर्ग, जूनियर पुरुष वर्ग, बालिका वर्ग तथा वरिष्ठ वर्ग की प्रतियोगिताओं में उत्साहजनक भागीदारी रही। सभी विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किये गये। डॉ. ममता शर्मा ने डॉ. छंगाणी के शोध एवं साहित्यिक अवदान को विस्तार से रेखांकित कर आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बताया।

देवांशी जैन प्रथम

उदयपुर (वि.)। गुजरात के कर्नावती विश्वविद्यालय में गत दिनों आयोजित यूथ पार्लियामेंट ऑफ इडिया-2021 में 'नई शिक्षा नीति-2020' पर अपने तथ्यों व तर्कों की दमदार प्रस्तुति देकर देवांशी जैन ने प्रथम स्थान हासिल किया। कर्नावती विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लॉ की छात्रा देवांशी ने कहा कि नई शिक्षा नीति बरसों से जड़ जमा चुकी शिक्षा पद्धति की खामियों को खत्म करने का साहस करती है। इसके माध्यम से बच्चे आत्मनिर्भर बनेंगे। नौकरी देने वाले बनेंगे और वे सवैधानिक मूल्यों के सच्चे वाहक भी बन सकेंगे।

आओ, भ्रष्टाचार हटायें

- लक्ष्मण बोलिया -

भ्रष्टाचार विरोधी दिवस पर
खाकी वर्दी- सफेद कालर वाले
रिश्वत नहीं लेने की शपथ लेने
बापू की मूरत के सामने खड़े थे
तभी अचानक
कुछ ठेकेदार- दलाल- नेता
ईमानदारी की शपथ लेने आगए
उन्हें देख आयोजक तिलमिलाए
ऊंची आवाज मे चिल्लाए-
बिन बुलाए आप कैसे आगए ?
यहां चपरासी- अफसर- कर्मचारी है
सबकी ईमानदारी के प्रति वफादारी है
लेकिन आप ?
आप लोग तो सत्ता के व्यापारी हो
रोजगार - तबादले बेचते हो
निर्वाचितों को मंडी में खरीदते हो
मोटा लेकर पद - टिकट देते हो
नौकरी परीक्षा के पेपर बेचते हो
मिल कर जनता को लूटते हो
फिर आप लोग
ईमानदारी की शपथ लेकर
महात्मा गांधी से छल क्यों करते हो?
अपमान से आया पसीना पोंछते हुए
नेता-दलाल-ठेकेदार झल्लाए
फिर मिल कर सब एक साथ
उनसे भी ऊंची आवाज में चिल्लाए
कोट- कपडे- वर्दी वालों सब सुनलो !
तो क्या तुम सब दूध से धुले हो?
उजले -धुले -पाक- साफ हो?
मत खुलवाओ तुम्हारी पोल हमसे
जानना चोहोगे तुम क्या करते हो?
तनख्वाह हाजरी की लेते हो
मोटा लेकर ही फाईलें चलाते हो
गायब करके खुद ही ढूंढ लेते हो
हमारे काम तुम नहीं करवाते हो?
हमारी दलाली से ऐश नहीं करते हो?
अपनी बखिया उधडती देख वे घबराए
उन्हें चुप रहने का इशारा करते हुए
आयोजक बोले --
अरे हां हम तो सभी एक हैं
आओ हम मिल कर
भ्रष्टाचार नहीं करने की शपथ लें
बेईमानी को ईमानदारी से हटाएं
भारत से भ्रष्टाचार भगाएं।

नैवेद्य अग्रवाल 'यंग एंटरप्रेन्योर' से सम्मानित

उदयपुर (वि.)। भारत के सबसे तेज़ी से बढ़ते स्टार्ट-अप्स में से एक, रुनाया ने अपने आधुनिक व्यापार मॉडल

के लिए और संसाधन क्षेत्र में परिवर्तन लाने के उपलक्ष्य में दो विशिष्ट सम्मान जीते हैं।

रुनाया के सह-संस्थापक, नैवेद्य अग्रवाल ने बिजनेसवर्ल्ड बीडब्ल्यू के युवा उद्यमी पुरस्कार 2021 को जीता है और कंपनी को वर्ल्ड सस्टेनेबिलिटी कांग्रेस द्वारा आयोजित, ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी लीडरशिप अवार्ड्स के इस वर्ष के संस्करण में 'सस्टेनेबल बिजनेस ऑफ द ईयर' के रूप में सम्मानित किया गया। नैवेद्य अग्रवाल ने कहा कि ये पुरस्कार रुनाया के संसाधन उद्योग में बदलाव लाने के दृष्टिकोण को दर्शाता है।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

22 नवम्बर को उदयपुर में श्री सुभाषचन्द्र-रूक्मणीदेवी नवलाया की शादी की 50वीं सालगिरह पर विज्ञान समिति में आयोजित समारोह में रंजना-डॉ. तुक्तक एवं शब्दांक अर्थांक भानावत, वर्द्धमान मेहता के साथ।

28 नवम्बर को भीण्डर में सुरेशकुमार-सुमित्रा नागोरी के सुपुत्र रौनक का विवाह धरियावाद निवासी सुरेन्द्रकुमार-हंसा भानावत की सुपुत्री प्रज्ञा के साथ सम्पन्न हुआ।

28 नवम्बर को बड़ीसादड़ी निवासी अमृतलाल-गुणबाला कण्ठालिया के सुपुत्र शुभम का विवाह छोटीसादड़ी निवासी जसवन्त-गुणबाला की सुपुत्री रानू के साथ सम्पन्न हुआ।

01 दिसम्बर को उदयपुर निवासी विजयसिंह-विदुला पंवार के सुपुत्र अंशुमानसिंह का विवाह बूंदी निवासी पूरणासिंह-दुर्गेशंकर खींची की सुपुत्री सुरभिकंवर के साथ सम्पन्न हुआ।

11 दिसम्बर को उदयपुर निवासी गिरीश-कौशल्या माहेश्वरी के सुपुत्र सोमिल का शुभ विवाह भीलवाड़ा निवासी अनिल-संगीता नुवाल की सुपुत्री शिवांगी के साथ सम्पन्न हुआ।

निराश्रित बालकों के लिए केरियर काउन्सलिंग

उदयपुर (ह.सं.)। जिले के 21 निराश्रित बालगृहों में 14 से 17 वर्ष तक आयुवर्ग के 120 बालक-बालिकाओं को केरियर सम्बन्धी काउंसलिंग जिला बालकल्याण समिति द्वारा दी गई। शिविर में डॉ. लालाराम जाट, डॉ. प्रिंस, डॉ. अंकित त्रिवेदी, ध्रुवकुमार कविया, नारायण सेवा के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल तथा संजय दवे ने बच्चों को केरियर संवारने की जानकारी एवं प्रेरणा दी।

कला-समझ की कुलबुलाहट

- राजेश गनोदवाले -

सांस्कृतिक विकास के खातों से स्वविकास के खाते भरे जाने लगें, हरी दूब की तरह प्यारे इन वैविध्य कला-रूपों का अद्‌भुत संसार जिसमें स्वप्नलोक के कई दृश्य खुलते थे अकादमियों, संस्कृति प्रभागों के रंग-बिरंगी ब्रोशरों में कैद हो गए और इन रंगीन कथाओं की रंगीनियां सिमट गई। अब यह चर्चा निहायत अर्थहीन है कि चिकारा लेकर गाने वाला देवार या खड़े साज की परम्परा के अवशेषों को जोड़ने की कोशिश में लगा पारम्परिक साधक लोक की परिभाषा में खरा क्यों नहीं उतरता? समाज के सामने आज वही कला लोककला है जिसकी सूचना अकादमिक जलसों की सूची में हो या फिर तथाकथित संस्कृति के स्वयंभू अगुवाओं की अपनी बनाई लिस्ट में अथवा सज-संवर कर लोक-संस्कृति के आयोजनों में अपनी स्थूलकाय उपस्थिति दर्शाने-वाले कला शून्य लोगों के कथित कला विवेक में।

समाज के सामने आज वही कला लोककला है जिसकी सूचना अकादमिक जलसों की सूची में हो या फिर तथाकथित संस्कृति के स्वयंभू अगुवाओं की अपनी बनाई लिस्ट में अथवा सज-संवर कर लोक-संस्कृति के आयोजनों में अपनी स्थूलकाय उपस्थिति दर्शाने-वाले कला शून्य लोगों के कथित कला विवेक में।

यह कितना विचित्र है कि कला-रूपों में फैली अप-संस्कृति लगातार बढ़ रही है और राजनीति और प्रशासन में आईएएस मर्मज्ञों की फौज कुलबुला रही है जो समवेतरूप से कलाओं को सरकारी फाईल बनाने पर अपनी पूरी ईमानदारी से मुस्तैद है।

किसी भी समाज की तात्कालिक परिस्थितियों के पृष्ठ बांधने हों तो उस समय की कला के रंग-स्वर-शब्दों को पढ़ना चाहिये। यह कितना विचित्र है कि कला-रूपों में फैली यह अप-संस्कृति लगातार बढ़ रही है और राजनीति और प्रशासन में आईएएस मर्मज्ञों की फौज कुलबुला रही है जो समवेतरूप से कलाओं को सरकारी फाईल बनाने पर अपनी पूरी ईमानदारी से मुस्तैद है।

पुस्तकों के अलावा अगर कोई सहजता से दे सकता है तो जीव-जगत से सम्बद्ध ये कला माध्यम ही हैं जो कला की दुनिया में उतारकर भविष्य की दिशा खड़ा कर देते हैं।

रेडिमेड लोक-संस्कृति का रूप सामने होता है। आज लोक सलाहकारों की ही इतनी नस्ल तैयार हो गई है कि असल-नकल में फर्क बड़ी पैचीदी गुत्थी बन गई है। एक ग्रामीण कलाकार जीवनभर अपनी कला को दुलारता है बिना समझौतों के जबकि उसे पता ही नहीं चलता कि कोई उसकी कला की आड़ में अपनी सेहत ठीक कर रहा है। कला में गड़बड़ियां हो रही हैं। यह एक चिन्ता का विषय तो बनता है पर दुख इस बात का अधिक है कि कलाओं की विकृत समानान्तर धारा फैल रही है और उसे ही मूल धारा मान लिया गया है।

मर की जीने वालों.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

ठाकुर सा. की बात भी नहीं मानने जैसी नहीं थी पर माना तो मृत अवस्था में पड़ा सबको दिखाई दे रहा था। लगभग तीन घण्टे बाद अचानक माना हिला और जी उठा। पूछने पर उसने बताया कि कोई आया और डण्डे मारकर उसे ले गया पर जब उसका नाम वहां नहीं पाया गया तो डण्डे मारकर कोई उन्हें वापस छोड़ गया।

इस घटना के बाद माना पांच बरस और जिया। यहां के समाजसेवी शिक्षक मगनलाल खण्डेलवाल ने बताया कि लगभग 90 बरस की उम्र में माना की मृत्यु हुई। वह बड़ा अच्छा कलाकार था। खासकर होली के दिनों में जब वह समूह रूप में गैर खेलता तो अपनी कमर में घुघरे बांधता था। उसे मरे पन्द्रह बरस होने आये। ठाकुर सा. हनुमानजी के बड़े भक्त थे और कई विद्याओं के जानकार थे ।

यहीं पूनाजी ने बताया कि उनके पिता जग्गाजी ने एक रात दस बजे अपनी देह छोड़ी तब वे खेत पर थे। जब उन्हें यह सूचना मिली तो रोते हुए घर आये। सगे समधियों को बुलाया गया किन्तु रात को एन बारह बजे वे जीवित हो उठे। उन्होंने पूनाजी को किससे क्या लेना, किसको क्या देना, किससे रिश्तानाता रखना, ना रखना, इस सबकी समझाइश दी। चार बजे उन्होंने हलुवा खाने को कहा तो उन्हें हलुवा खिलाया गया और आराम से सुलाया गया। सुबह देखा तो वे मरे हुए पाये गये। ऐसा लगा जैसे वे हलुआ खाने और सीख देने के लिए ही जीवित हुए और यह काम कर चलते बने।

लालचन्दजी माली के पिता धर्माजी के दादा फत्ताजी ने जीवित समाधि ली। फत्ताजी ने अपने गांव के लोगों को ही नहीं, पास के 5 गांवों के लोगों को बुलवाया। सबसे रामासामी की और कहा कि मेरे मरने पर कोई रोयेगा नहीं। मुझे तरगटो (अर्थी) पर भी मत ले जाना। यह कह सबके सामने उन्होंने समाधि ले ली। समाधि देकर जब लोग लौट रहे थे तो रास्ते में मिले लोगों ने पूछा कि कौन मर गया? उत्तर मिला कि फत्ताबा ने जीवित समाधि ली।

इस पर वे बोले- 'कहां ली समाधि! पांच मिनट पहले तो वे हमसे मिले हैं।' किसी ने कहा- 'फत्ताबा को मैंने अभी छोड़ा।' किसी ने कहा- 'उनके साथ अभी-अभी चिलम पीकर आया हूं।' ऐसे एक नहीं, अठारह व्यक्ति मिले जो फत्ताजी के साथ बातचीत सत्संग अथवा चिलम तमाखू में शामिल रहे। ऐसे करामाती और कबदी थे फत्ताबा! ओर गांव के मगनलालजी खण्डेलवाल ने मुझे और भी अनेक लोगों से मिलाया। इन्हीं के साथ मैं गरासिया जनजाति की बस्तियों में घूमा और 'कुंवारे देश के आदिवासी' पुस्तक लिखी। उनसे अभी भी मेरा सम्पर्क है।

सोजत तहसील के रेंदड़ी गांव के आसकरण लखावत अपने मकान के लिए ईंटों का ट्रेक्टर भरवा रहे थे कि उन्होंने हवा का एक तेज झोंका महसूस किया और वे वहीं लुढ़क गये। मजदूरों की निगाह उन पर पड़ी तो वे मरे पाये गये। रोना-धोना मच गया । गांव के लोग इकट्ठे हुए और दाहक्रिया की सारी तैयारी की गई।

उन्हें श्मशान ले जाने ही वाले थे कि यकायक लाश ने करवट ली। देखते-देखते आंखें खोली। पूछा तो बताया, 'मैं तो यमदूतों के पास पहुंच गया था। वहां एक तगड़े से आदमी ने कहा- 'अरे यहां कहां इस आसकरण को ले आये! बिजलियावास वाला आसकरण लाना था।' बिजलियावास रेंदड़ी के पास का ही गांव है। थोड़ी ही देर में समाचार आ गये कि वहां के 95 वर्षीय आसकरण आशिया चल बसे हैं। यहां के रणछोड़सिंह आशिया ने भारतीय लोककला मण्डल में मुझे बताया कि चालीस वर्ष पुरानी यह घटना आसपास के इलाके में आज भी लोगों की जबान पर चढ़ी हुई है। श्री आशिया कलामण्डल संग्रहालय के इन्चार्ज रहे। वर्षों पूर्व उनका निधन हो गया।

गंगरार तहसील के गांव सांवता बोलों का, की अम्बाबाई प्रसवोपरान्त इतनी दुबली हो गई कि कुछ दिनों बाद उसका प्राणांत हो गया। लगभग तीन घण्टे पश्चात जब उसे श्मशान ले जाने ही वाले थे कि प्राणों का संचार हुआ। इससे वहां एकत्रित सभी लोग असमंजस में पड़ गये। पूछने पर अम्बाबाई ने बताया, 'वह सरग में एक ऐसी जगह पहुंच गई जहां भगवान की आरती हो रही थी।

उस आरती में उसके पुरखे भी सम्मिलित थे। वहीं उसके दादा-श्वसुर दामालालजी माफीदार मिले जिन्होंने अम्बाबाई को देख आश्चर्य किया और कहा कि बेटी तू यहां कैसे! तुम्हारी सास तो घर में बीमार है। यदि वह मर गई तो लोग तुझे क्या कहेंगे? इतना सुनते ही अम्बाबाई मन्दिर के चबूतरे से कूदी और इधर उसकी लाश उछल पड़ी। अम्बाबाई के सुपुत्र डॉ. एम. एल. दशोरा ने बताया कि यह घटना सन् 1936 की है। तब उनकी मां उन्नीस वर्ष की थीं। उनके घर तो वह पचास बरस तक जीवित रही।

उदयपुर के डेनिश डिसोजा के साथ भी ऐसी ही घटना सन् 1958 में सोलह वर्ष की उम्र में घटी जब पत्थर काटने की एक मशीन बनाई। बरसात के दिन की एक घटना सुनाते हुए डेनिश ने कहा- 'जब मैं मशीन चालू करने गया तो बिजली के करंट से मेरे हाथ मीटर के चिपक गये। मैं जोर-जोर से चिल्लाया तब तीसरी मंजिल से मदनलाल व्यास वहां आये। मुझे देखते ही उन्होंने आयुर्वेद सेवाश्रम के संस्थापक वैद्य अमृतलालजी को आवाज दी। वैद्यजी दौड़े-दौड़े आये तब तक मेरे प्राण जा चुके थे। आंखें फिर गई थीं और जीभ बाहर निकली हुई थी। बिजली की तरह यह घटना लोगों में फैल गई। देखते-देखते वहां खासी भीड़ इकट्ठी हो गई। इतने में मैंने हल्की सी करवट ली जैसे मेरी ऊँघ उड़ी हो। मुझे देख लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।'

डेनिश ने बताया कि मैं कहां चला गया, मुझे याद नहीं रहा पर लगा जैसे मैं हवा में तैरता हुआ बहुत दूर निकल गया। रास्ते में मैंने फलों से लदे ऐसे खूबसूरत पेड़ देखे कि आज तक नहीं देख पाया। ऐसे-ऐसे फूलों के वन देखे कि कुछ कहा नहीं जा सकता। श्री डेनिश कला मण्डल में हर काम में उस्ताद रहे। पिछले दिनों ही 30 जून 2021 को मैंने उनसे मिलते इस घटना का जिक्र किया तो वे उस काल के अनेकों की स्मृतियों को उकेरते रहे।

बीकानेर में उदय नागोरी ने बताया कि वहां जेठमल शर्मा का बीजली एक्सीडेंट हो गया तब उन्हें अस्पताल ले जाया गया जहां वे मृत घोषित कर दिये गये। घर लाकर दाहक्रिया की तैयारियां होने लगी। लगभग तीन घण्टे बाद वे पुन: जीवित हो उठे। शर्माजी ने बताया कि दो आदमी उन्हें पकड़कर ले गये।

रास्ते में उन्होंने पीने को पानी और खाने को फल मांगे पर उन्हें कुछ नहीं दिया गया और एक बड़े हॉल में ले गये जहां बारह-तेरह फीट का एक व्यक्ति था। उसने पर्चे खोले और हाथ से इशारा किया कि पर्चों में इसका नाम नहीं है तब दोनों हंसे और कूकने लगे। दोनों ने मेरी बांहें पकड़ी और जोर से मुझे फैंका। तब मैंने अपनी लाश में प्रवेश किया। फैंकते समय एक ने कहा कि गोगा गेट पर जेठमल कुम्हार है उसे ले आओ। यह घटना सन् 1944 की 25 मई को घटी।

यहीं रह रहे लच्छीराम अग्रवाल 32 वर्ष की उम्र में जब नाई की दुकान पर अपने बाल संवरा रहे थे कि रामप्यारे हो गये। दाह क्रिया के लिए उन्हें श्मशान ले जाया गया और अग्नि दी जाने लगी कि उनके पैर का अंगूठा हिया। इस पर उन्हें चिता से नीचे उतारा गया। वे उठ बैठे और जब उन्हें चेतना आई तो अपने को श्मशान में पाकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने बताया कि दो दूत उन्हें हरे रंग के एक आलीशान भवन में ले गये। उसमें कपूरी रंग का एक कमरा था। उसमें बाद में क्या कुछ हुआ, उन्हें नहीं मालूम। लच्छीरामजी अभी 62 वर्ष के हैं। श्री उदयजी नागोरी को मेरी छोटी बहिन सुधा ब्याही है। उन्होंने मुझे उधर के अनेक स्थानों की यात्राएं करा कई तरह की जानकारियां सुलभ कराईं। इसके अलावा मेरी आत्मजा डॉ. कविता तथा जमाता डॉ. सतीश मेहता ने भी अनेक कलाविधा के कलाकारों से मिला विविध लोकमंचीय विधाओं के लेखन की सामग्री से समृद्धि दिलाई।

ऐसी घटनायें और भी कई जगह घटी। कानोड़-वल्लभनगर में घटी। देलवाड़ा का भूरीलाल दशोरा पुनर्जीवित हुआ। फतहनगर के पास के धनेरिया गांव में गणेश शर्मा की पत्नी प्रसूतावस्था में चल बसी। अर्थी सजाई गई। सारी तैयारी हो गई कि अचानक उसमें हरकत हुई। उसने टेंका किया। आंख खोली। उठ बैठी। बोली- 'मुझे दो आदमी ले गये। रास्ते में मुझे वही भिखारण मिली जिसे मैं रोटी देती रही। फिर वो स्त्री मिली जिसे एकबार पोमचा दिया। फिर सासुजी मिली। मैंने कहा कि मेरे पांव जल रहे हैं। छाले पड़ जायेंगे तो उन्होंने मुझे ओढ़ने को छतरी दी। ऊपर गई तो बड़ी सुहावनी छटा। कई औरतें और थीं। बहीड़ों के ढेर पड़े थे। उनको खोलकर मेरा नाम देखा गया तो पता लगा कि मेरे अभी कुछ दिन और बाकी हैं।

इन कई सारी घटनाओं से यह स्पष्ट है कि जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। अच्छे कर्म करने वालों के फल भी उतने ही अच्छे होते हैं। उन्हें बैकुण्ठ मिलता है । राम-लछमण का साथ मिलता है। उन्हें लेने के लिए स्वर्ग से विमान आता है। जो व्यक्ति बुरे कर्म करते हैं उन्हें फल भी वैसा ही मिलता है। इस जन्म में व्यक्ति जो कुछ अच्छा-बुरा फल भोग रहा है वह उसके पूर्वजन्म के कर्मों का फल है। एक व्यक्ति अच्छा भी होता है पर उतना ही बुरा कर्म करता पाया जाता है। वह घोर पापी दुराचारी होता है पर उतना ही भजनभाव और ईश्वर-आराधना में लगा दिखाई देता है। अच्छा कर्म करने वाला इस जन्म में ही नहीं, अगले जन्म में भी अच्छा बनकर खूब वाहवाही लूटता है।

राजस्थान में ऐसी ढेरों व्रतकथाएँ हैं जिनमें जैसा कर्म वैसा फल के उदाहरण भरे पड़े हैं। इन कहानियों की यही सीख है कि व्यक्ति भूलकर भी बुराई की ओर प्रवृत्त न हो और अपने को मन, वचन और कर्म से सदा शुद्ध, पवित्र और सगुणी बनाये रखे। सभी धर्मग्रंथों, शास्त्रों और महापुरुषों ने भी यही बात कही है। मर कर जो लोग पुन: जीवित होकर आते हैं और वे जो आंखों देखी घटनाएं सुनाते हैं उनमें भी यही तथ्य प्रकट होता है।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (2)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

हंगरी से श्री वीग का आगमन :

रोडेल्फ वीग हंगरी के सुप्रसिद्ध लोकसंगीतज्ञ तथा कलाविद हैं। यूनेस्को की ओर से भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय तथा संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से श्री वीग ने भारतीय घुमक्कड़ जातियों के लोकसंगीत पर विशेष अध्ययन करने हेतु सर्वप्रथम भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर को अपना अध्ययन क्षेत्र चुना। वीग को साथ लेकर मैं तथा केसरीसिंह आड़ा लगभग 10 दिन तक बणजारा, कालबेलिया, गाडोलिया लुहार, ढोली, हरिजन, भील आदि जातियों के लोकसंगीत पर अध्ययन करते रहे। उदयपुर में वीग सूरजपोल स्थित होटल अप्सरा में ठहरे जहां हमने उन्हें अप्सरा का अर्थ बताया तब वे यही कह हंसते-मुस्कराते रहे- 'होटल अप्सरा इज विदाउट अप्सरा।'

31 अगस्त 1967 को उनके सम्मान में कलामंडल के कठपुतली प्रेक्षालय में सायं 6 बजे एक गोष्ठी आयोजित की गई। इसमें उन्होंने अनेक उद्धरणों द्वारा यह सिद्ध किया कि यूरोपीय घुमक्कड़ जातियों का मूल उद्भव भारत रहा है तथा दोनों के लोकसंगीत में भी अधिकाधिक साम्यता पाई जाती है। श्री वीग का लोकसंगीत का शोध सर्वेक्षण कार्य इस प्रकार रहा -

(क) 22 अगस्त 1967, मुल्लातलाई (उदयपुर) कालबेलियों के निम्नांकित गीतों का अध्ययन किया गया

(1) जैपरिया रो लेरियो लाव रे रसिया
(2) बुगला ढाणा सू उड़जाजे रे
(3) कणी रे खुदाया कुवा वावड़ी रे पणियारी जी ए लो
(4) ईडोणी रे, ईडोणी रे कारणे
(5) चालोनी बद्रीजी मारवाड़ चालां
(6) लार लेरिया वाली या तो झीणा घूंघट वाली
(7) लेरी जीवड़ा रे छीना रे जीवा रे ताला तोड़ दे
(8) सुइजा मुन्ना सुइजा लाल पंलग पर सूजा...
(9) केसरियां आपां चालांनी
(10) मान संकर्‌या रे
(11) रेगी रे वागां री कोयलां करग्यो रे संकर्‌या
(12) काजलियो काड़े ने केने नरकाया रे

गायिकाएँ थीं- गलकी (18 वर्ष), सज्जा (20 वर्ष), गलकी (25 वर्ष), सणगारी (40 वर्ष), चंदा (17 वर्ष)। इनके साथ गणेश (40 वर्ष) का पूंगी वादन भी सुना गया। गीतों के साथ थाली तथा ढोल बजाया गया।

(ख) 24 अगस्त 1967 को रात्रि को 8 से 11 बजे, ठक्करबापा कोलोनी उदयपुर के हरिजनों से निम्नलिखित भजनों का अध्ययन किया गया-

(1) मीरा जनमी मेड़ते राणोजो चित्तोड़
(2) खम्मा खम्मा हो अजमालजी रा कंवरा
(3) हां सांवरियो गिरधारी मेरा रामजी ओ
(4) हां ऊंडा-ऊंडा कुवा अटग जल भरिया
(5) पेले गणपत पूज के
(6) माईजो माने लागे हवे को बाण
(7) मैं तो पायां पडूं तोरे जोगी
(8) अरे ओ मुरली वाले, नाग को नथने वाले
(9) मेरी लाज रखो गिरधारी

इनमें से प्रथम चार भजन कवरबाई (50 वर्ष), गंगाबाई (60 वर्ष), फूलीबाई (40 वर्ष), हगामीबाई (35 वर्ष) तथा शेष पाँच भजन रोशनलाल (27 वर्ष), चन्द्रकांत (20 वर्ष) तथा रोड़ीलाल (20 वर्ष) से रेकार्डिंग किये गये। इन भजनों के साथ निसाण, चिपटा, ताल तथा ढोलक नामक वाद्यों ने संगत की।

(ग) 26 अगस्त 1967 को अपरान्ह 1 से 4 बजे अम्बेरी गांव (उदयपुर से 6 मील उत्तर) की भील महिलाओं से निम्नांकित गीत अध्ययन के विषय बने-

(1) चालो रा गजानंद मालीड़ा रे चालां
(2) बना थारे दादाजी ओ बाग हल्गायो
(3) छगन बाग में बाग बगीचा
(4) यो तो रो दाड़ो वनाजी हूं कीदो
(5) छाने छाने खड़की खोल छोटा देवरिया
(6) लेब लेंबा लेंबोली
(7) डोड़ी रे दरवाजे भगतण नाचे रा
(8) म्हारा बाईसा तो सासरिये साल्या ए
(9) गंगा वो राई ने केवां बोले
(10) देबारी रे दरवाजे या हेंडो डोलर घाली
(11) म्हारे कवो चाक्यो है, बेनोई रे कवो चांकणो है।

गायिकाओं में धनकी (13 वर्ष), नानकी (14 वर्ष), खुमाणी (16 वर्ष), लाली (15 वर्ष) तथा नाथी (50 वर्ष) थीं।

इसी दिन रात्रि 7 से 8 बजे तक गांधी ग्राउन्ड उदयपुर के पास बणजारों से जो गीत रेकार्डिंग किये गये वे प्रकार थे-

(1) हां लेरियो मती ओड़े सुगन आवे लेर्‌या की
(2) खरी दोपरियां तो दरबार चढ़े
(3) सात सामर्‌या बाबा केसरियो
(4) हरर्र-हरर्र छोरी
(5) छला बारा का बजार में रे
(6) गोरी पांच बजां पण जाती
(7) हाय प्रीत करणा ऐसी करणा

गायिकाएं थीं- भूरी (50 वर्ष), मानी (35 वर्ष), झूमा (10 वर्ष), जानी (12 वर्ष), शांता (15 वर्ष) तथा गायक थे- खेमराज (25 वर्ष), मांगीलाल (20 वर्ष), नाथू (15 वर्ष), गोमा (20 वर्ष)। वाद्यों में ताल, मजीरा, नगाड़ी तथा वीणा रहे।

(च) 28 अगस्त 1967 को संध्या 4 से 6 बजे बड़गांव (उदयपुर से 4 मील उत्तर) से मीठूनाथ (45 वर्ष) तथा गुलाबनाथ (40 वर्ष) नामक कालबेलिया से जिन गीतों का अध्ययन किया गया वे इस प्रकार थे-

(1) देख तेरे संसार की हालत (बाँसुरी तथा डुगडुगी वादन का गीत)
(2) पूंगी वादन : गीत-इडोणी, पणिहारी तथा रणमलियो।
(3) कांदा खागी मूला खागी।
(4) उमपुरी लाल परी।

(छ) 31 अगस्त 1967 को दिन को 11 से 12 बजे भारतीय लोककला मंडल की लोकगीत गायिकाएँ श्रीमती जानकीबाई (45 वर्ष) तथा नारायणीबाई (35 वर्ष) से निम्नांकित गीतों का रेकार्डिंग किया गया-

(1) दूंद दूंदाला ओ गणपत सूंड सूंडाला
(2) म्हारो नाम पेमा पतली
(3) उठो-उठो ओ भावज
(4) म्हारा व्याईसा ओ डोड़ी नजरां कई झांको
(5) ढोला आप रंगाई दो पोमचो जी
(6) हां बाईसा रा वीरा, हां नगदी रा वीरा
(7) बनो म्हाने प्यारो लागे सा
(8) आगे जाई ने पाछा नालिया

इसी दिन यहाँ के प्रदर्शन विभाग के इन्चार्ज संपतकुमार शर्मा से दीपचन्दी, त्रिताल, रूपक तथा झपताल की तालों का अध्ययन किया गया।

(ज) 1 सितम्बर 1967 को प्रात: 10 से 12 बजे कलामंडल के लोकगीत गायकों से विविध लोकगीतों का अध्ययन किया गया। लोकगीत थे-

(1) आजो पनामारू मारे रातीजरो मजोलो लेता आजो
(2) थें तो पीवो म्हारा चतर सुजान
(3) लालर लेदो नी बादीला म्हाने हरिया डाबर की
(4) हां धीमो मदरो चाल रे वायरिया
(5) गुलाबी साड़ी गोरा सा मुखड़ा पे प्यारी लागे रा
(6) हाथा माई चंटी ने पावां रमझोल
(7) थें तो जाई बेठ्या पनामारू चाकरी जी
(8) हलो ए मलो ए हेली बागां में चालां

गायिका -श्रीमती नारायणीबाई

(1) नाचे मती गोरी नजर लग जाये
(2) आमलो बेठ लो वां वातां पूछां रा

गायिका - श्रीमती जानकीबाई

(1) हां हथेली जी ऊपर चूगो चुगाऊं थने
(2) देवर म्हारा रे दीखे धोलागड़ रो मेल

गायक - नारायणलाल गंधर्व

चिड़ावी ख्यालों का सर्वेक्षण :

सांस्कृतिक यात्रा के साथ-साथ इस बार चिड़ावी ख्यालों के सम्बन्ध में भी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की गई । इसके अनुसार

सर्वप्रथम चिड़ावा में नानू राणा ने इन ख्यालों का सूत्रपात किया। ये ख्याल मुख्यत: अपनी गायकी के लिए प्रसिद्ध हैं। लम्बी-लम्बी आलापों के कारण इस गायकी का श्रवण बड़ा सुखद एवं कर्णप्रिय होता है।

इन ख्यालों में शास्त्रीय रागों का भी मिश्रण मिलता है। इनमें देश, भैरवी, दरबारी, काफी आदि रागें विशेष प्रचलित हैं। इनका गुंफन दोहा, झेला, झड़, शेर, चौबोला, लावणी, कवित्त आदि में मिलता है। पड़दे रहित तख्तों का साधारण सर्वदिशीय मंच, नक्काड़ा-नवकाड़ी, हारमोनियम तथा 10-12 खिलाड़ियों का दल मिलकर इन ख्यालों में अपार रस की सृष्टि करते हैं। नानू राणा के लिखे निम्नलिखित ख्याल मिलते हैं-

चत्रमुकुट का ख्याल, पृथ्वीराज का ख्याल, बेलादे रिसालू का ख्याल, नोपदे रिसालू का ख्याल, अमरसिंह राठौड़ का ख्याल, मालदे हाड़ीराणी का ख्याल, सीलो सतवंती का ख्याल, राजा रिसालू का ख्याल, वीरमदे सोनगरा का ख्याल, गोपी हरिश्चन्द्र का ख्याल, मरवण भात का ख्याल, नरसी भगत का ख्याल. चन्दमिलयागिरि का ख्याल, रांझाहीर का ख्याल, इन्द्रसभा, पांडवों का ख्याल, लैलामजनू का ख्याल, राजा चन्द्रप्रताप का ख्याल, जौहरी खतराणी का ख्याल, राजा भोज भानुवति का ख्याल, राजा कर्ण का ख्याल, सुलतान निहालदे का ख्याल, सैयदखां पठान का ख्याल, सौदागर वजीरजादो का ख्याल, बीनबादशाह शहजादी का ख्याल, राव हमीरहठ का ख्याल, पूरणमल भक्त का ख्याल, राजा नलदमयंती का ख्याल, छोटा कंथ का ख्याल, वीरमदे बादशाहजादी का ख्याल, अमरसिंह हाड़ीराणी का ख्याल, राजा ब्रज मुकुट का ख्याल, राजा हरिश्चन्द्र का ख्याल, शशि पूनू का ख्याल, माधवानल कामकंदला का ख्याल, हकीमजी गरमीवाले का ख्याल, पठान शहजादी का ख्याल, सुल्तान बादशाह का ख्याल, भक्त सुदामा का ख्याल, रूक्मणीमंगल का ख्याल, गुलरूजरीना का ख्याल, रणधीरसिंह पन्नादे का ख्याल, प्राभलदे खीवजी का ख्याल, ढोलामरवण का ख्याल, जगदंबे कंकाली का ख्याल, चकवाबेण का ख्याल, पांडवों का पहला भाग, राजा विराट का ख्याल, किलंजा इन्द्रपरी का ख्याल, सेठ मुनीमजी का ख्याल, शहजादे का ख्याल, शहज़ादा भटियाणी का ख्याल, गांधी इतरवाले का ख्याल, अमलदार का ख्याल, कलावती का ख्याल, राजा भोज का ख्याल तथा बेलादे का ख्याल। वर्तमान में चिड़ावा का दूलजी, झुंझनू का नजीरखां, जाखल का भैरू तथा सुनारी, जोधपुर का गन्नीखां, पीरूखां इन ख्यालों के मुखिया खिलाड़ी हैं।

पाबूजी की पड़ :

(ट) 2 सितम्बर 1967 को पाबूजी की पड़ सम्बन्धी अध्ययन-सर्वेक्षण के लिए पड़ बांचनेवाले भोपों के दो दल कलामण्डल में आमंत्रित किये गये। इनमें से एक दल मारवाड़ जंक्शन (धन्ना भोपा, उम्र 35 वर्ष तथा लेरी भोपिन उम्र 30 वर्ष) तथा दूसरा बिजलियावास (लालू भोपा उम्र 60 वर्ष तथा छीयां भोपिन उम्र 35 वर्ष) का था। बिजलियावास मारवाड़ जंक्शन से 6 मील दक्षिण में है।

इनमें से पहले दल का 2 सितंबर तथा दूसरे दल का 4 सितंबर रात्रि को प्रदर्शन रखा गया। पड़ों की परम्परा, प्रकार, प्रदर्शन, विधि, क्षेत्र, मुख्य कलाकार, गाथा, शैली आदि से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। साथ ही पड़ में प्रयुक्त विविध लोकधुनों तथा अन्य गीतों का रेकार्डिंग भी किया गया। इसी सन्दर्भ में इनसे डूंगजी जवारजी गाथा, गीत भी लिखा गया। पड़ में प्रयुक्त गाथा को जब ये पड़ के साथ नहीं गाकर अलग से गाते हैं तो उसे परवाड़ा कहते हैं।

- क्रमश:

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।